43

ज्ञानामृत

वर्ष 41, अंक 04, अक्तूबर 2005, मूल्य 05.50

मासिक

1. आबू पर्वत (ओमशान्ति भवन)- आध्यात्मिक रिट्रीट का उद्घाटन करते हुए राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश भ्राता राजेन्द्र व्यास, ब्र.कु. बृजमोहन जी, कर्नाटक के राज्यपाल महामहिम भ्राता टी.एन. चतुर्वेदी जी, राजयोगिनी दादी जानकी जी, हरियाणा उच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश भ्राता दैवी सिंह रिवारिया जी तथा अन्य । 2. आबू रोड (शान्तिवन)- अखिल भारतीय सरपंच महासम्मेलन का उद्घाटन करते हुए केन्द्रीय कृषि एवं खाद्य राज्यमंत्री भ्राता कान्तिलाल भूरिया जी, राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी, ब्र.कु. निर्वैर भाई, ब्र.कु. मोहिनी बहन, ब्र.कु. मुन्नी बहन, ब्र.कु. सरला बहन, ब्र.कु. राजू भाई, ब्र.कु. अमीरचन्द भाई तथा ब्र.कु. विजय भाई ।

1. चण्डीगढ़- हरियाणा के राज्यपाल महामहिम भ्राता ए.आर.किदवई को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु. अचल बहन । **2. कटक-** उड़ीसा उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश भ्राता सुजीत बर्मन को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु. सुलोचना बहन । **3. कोयम्बतूर-** तामिलनाडू के राज्यपाल महामहिम भ्राता सुरजीत सिंह बरनाला को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु. शान्ता बहन । **4. बैंगलोर-** कर्नाटक के राज्यपाल महामहिम भ्राता टी.एन. चतुर्वेदी को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु. अम्बिका बहन । **5. देहरादून-** उत्तरांचल के राज्यपाल महामहिम भ्राता सुदर्शन अग्रवाल को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु. मंजू बहन । **6. लखनऊ-** उत्तर प्रदेश के राज्यपाल महामहिम भ्राता टी.राजेश्वर जी को राखी बाँधने के पश्चात् ब्र.कु. राधा बहन, मंजू बहन, सीता बहन तथा अंजू बहन उनके साथ । **7. गाँधीनगर-** गुजरात के राज्यपाल महामहिम भ्राता नवलकिशोर शर्मा जी को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु. सरला बहन । **8. इम्फाल-** मणिपुर के राज्यपाल महामहिम डॉ. भ्राता एस.एस. सिंधु जी को आत्म-स्मृति का तिलक लगाती हुईं ब्र.कु. नीलिमा बहन । **9. देहली (शक्ति नगर)-** देहली के महामहिम लेफ्टिनेंट गवर्नर भ्राता बी.एन.जोशी राखी बँधवाने के पश्चात् ब्र.कु. चक्रधारी बहन से ईश्वरीय संदेश सुनते हुए । **10. हैदराबाद-** आन्ध्रप्रदेश के राज्यपाल महामहिम भ्राता सुशील कुमार शिंदे को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु. कुलदीप बहन । **11. कोलकाता-** पश्चिम बंगाल के राज्यपाल महामहिम भ्राता गोपालकृष्ण गाँधी (महात्मा गाँधी जी के पौत्र) को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु. कानन बहन । **12. काठमाण्डु-** प्रतिनिधि सभा के सीकर भ्राता तारानाथ रानाभाट को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु. किरण बहन ।

– संजय की कलम से

ज्ञान-दीप जगाना ही सच्ची दीवाली है

दीपावली भारत का एक ऐसा विशेष त्योहार है जिसे भारत के प्राय: सभी लोग हर्षोल्लास से मनाते हैं। इस दिन हर छोटे और बड़े, ग़रीब और अमीर तथा ग्रामीण और नागरिक के चेहरे पर खुशी के चिह्न दिखाई देते हैं। तब रात्रि को दीपों की जगमगाहट का अतीव सुन्दर दृश्य देखते ही बनता है।

इस त्योहार के प्रारम्भ के बारे में किंवदन्तियाँ

इस त्योहार का प्रारम्भ कब और कैसे हुआ ? इसके बारे में अनेक किंवदन्तियाँ अथवा पौराणिक कथायें प्रचलित हैं। एक आख्यान यह है कि चिरातीत काल में एक समय ऐसा था जब नरकासुर ने सारी सृष्टि पर अपना आधिपत्य जमा लिया था। भगवान् ने नरकासुर का नाश कर सृष्टि को उसके भय से मुक्त किया और देवताओं को नरकासुर के बन्धन से छुड़ाया। अत: दीवाली से एक दिवस पहले की रात्रि को 'नरक-चतुर्दशी' मनाई जाती है जिसे 'छोटी दीवाली' भी कहते हैं और उसके अगले ही दिन अर्थात् कार्तिक की अमावस्या को बड़ी दीपावली महोत्सव होता है।

दूसरी कथा यह है कि ''दैत्य राजा बलि ने सारे भू-मण्डल पर अपना एकछत्र राज्य जमा लिया था। तब पृथ्वी पर आसुरीयता फैल रही थी और धर्म-निष्ठा नष्ट प्राय: हो चली थी। तब राजा बलि ने श्री लक्ष्मी को सभी देवी-देवताओं सहित अपने कारागार का बन्दी बना लिया था। उस समय भगवान् ने राजा बलि की आसुरी शक्ति पर विजय प्राप्त करके श्री लक्ष्मी व सभी देवी-देवताओं को कारागार की यातनाओं से छुड़ाया।'' उसी के उपलक्ष्य में तब से हर वर्ष इस रात्रि को दीपोत्सव किया जाता है और घरों के द्वार खोलकर श्री लक्ष्मी का आह्वान किया जाता है।

इन आख्यानों का अर्थ-बोध

ऊपर जिन दो आख्यानों अथवा कथाओं का उल्लेख किया गया है, उनका अक्षरश: अर्थ तो अग्राह्य ही होगा क्योंकि किसी एक व्यक्ति द्वारा श्री लक्ष्मी तथा अन्य सभी देवी-देवताओं को अथवा सारी सृष्टि को बन्दी बना देना तो सम्भव ही नहीं है।

शेष पृष्ठ......30 पर

अमृत-सूची

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	65/-	1,000-
वर्ल्ड रिन्युअल	65/-	1,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	600/-	6,000-
वर्ल्ड रिन्युअल	600/-	6,000/-

शुल्क केवल 'ज्ञानामृत' अथवा 'द वर्ल्ड रिन्युअल' के नाम से ड्राफ्ट या मनीआर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है–सम्पादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन – 307510 (आबू रोड) राजस्थान।

– शुल्क के लिए सम्पर्क करें–
09414423949, 09414154383

मूल्य सम्बन्धों में

सम्पादकीय ....

किसी ने एक बार मुझसे पूछा कि संसार का सर्वश्रेष्ठ शास्त्र कौन-सा है, तो मैंने उत्तर दिया – व्यवहार शास्त्र। संसार में जितने भी प्रकार के शास्त्र हैं वे सब प्रकृति के साथ, अन्य मानवों के साथ और भगवान के साथ हमें श्रेष्ठ व्यवहार करना ही सिखाते हैं। व्यवहार अच्छा होने पर ही सम्बन्ध अच्छे हो सकते हैं और सम्बन्ध अच्छे होने पर ही संगठन मजबूत बनते हैं, एकता कायम रहती है।

कलियुग की अनेक निशानियों में मुख्य दो निशानियाँ ये हैं कि मानव का प्रकृति और साथी मानवों के साथ सम्बन्ध बिगड़ जाता है जिसके कारण पारिवारिक, सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक संगठनों में बिखराब आ जाता है। जैसे अनेक तिनकों से बनी झोंपड़ी आँधी में भी शरण प्रदान करती है। अनेक तीलियों से मिलकर बनी झाड़ू सफाई कर सकती है और अनेक धागों से मिलकर बना रस्सा किसी को भी बाँध सकता है इसी प्रकार आपसी स्नेह, विश्वास, सौहार्द, सद्भाव पर आधारित संगठन अपने उद्देश्यों में सफल हो सकता है।

मानव को मानव से जोड़ने वाले हैं मूल्य

जैसे लकड़ी को लकड़ी से जोड़ने के लिए फैविकोल, पत्थर को पत्थर से जोड़ने के लिए सीमेंट या चूना, लोहे को लोहे से जोड़ने के लिए धातुओं की ज़रूरत होती है, इसी प्रकार मानव को मानव के साथ जोड़ने के लिए दया, त्याग, सेवा, सत्कार, सहयोग, सत्य, संतोष, सरलता, सादगी आदि गुणों की ज़रूरत होती है। इन गुणों के न होने से संगठन में अपनी डफली-अपना राग वाली स्थिति पैदा हो जाती है। कई सदस्यों को यह महसूसता आने लगती है कि उनके साथ न्याय नहीं हुआ, उनके साथ किए गए वायदे किसी समर्थ पद वाले ने तोड़ दिए, उनके हितों की सुरक्षा नहीं की गई, उनको उनकी मेहनत का उचित फल नहीं दिया गया, उनके आगे बढ़ने के रास्ते अवरुद्ध कर दिए गए, उनके उमंग-उत्साह के पंख काट दिए गए, सांसारिक वैभवों और पदार्थों को स्नेह के रिश्तों से बढ़ कर मान दिया गया, उन्हें दर-बदर कर दिया गया, उनके कीमती समय, शक्ति, धन को बिना उचित मुआवजे के डुबो दिया गया – इस प्रकार के कई नकारात्मक तथा हतोत्साहित करने वाले विचार उनके मन में आने लगते हैं।

स्नेह रूपी चूना पुन: लगाएँ

हम सभी अच्छी तरह से जानते हैं कि रिश्तों का महत्त्व जीवन में ऐसे ही है जैसे कि आत्मा के लिए शरीर का महत्त्व। शरीर का हर अंग आत्मा के पुण्य के खाते को बढ़ाने का आधार है। मान लीजिए, हाथ में फोड़ा हो गया तो हम हाथ को काट कर नहीं फेंकते बल्कि इलाज करवाते हैं। हृदय की धमनियाँ बन्द हो जाने पर हृदय को नहीं निकालते वरन् अवरोध खोलने की कोशिश करते हैं। हम यह जानते हैं कि हाथ बहुत काम की चीज़ है, इसने आत्मा पर बड़े उपकार किए हैं परन्तु फोड़ा खराब है। हमें फोड़े से नफ़रत है, हाथ से नहीं। हृदय तो सारे शरीर का आधार है, हमें उससे नफ़रत नहीं, उसमें आए अवरोधों से नफ़रत है। इसी प्रकार जिनके साथ हमारे संस्थागत, पारिवारिक, सामाजिक, सेवाक्षेत्र के या अन्य किसी भी प्रकार के आत्मिक-स्नेह भरे सम्बन्ध हैं उनमें यदि किसी प्रकार का स्वार्थ, विकृत अभिरुचियाँ, अवगुणग्राही दृष्टि, दुर्भावना, ईर्ष्या, द्वेष, बदले की भावना, नफ़रत, पूर्वाग्रह, असत्यता, अनुमान, इच्छा, अपेक्षा आदि पैदा हो गए हों तो इन अवगुणों रूपी फोड़ों और अवरोधों को मिटाने की ज़रूरत है, न कि उस व्यक्ति से सम्बन्ध तोड़ने की। जैसे दो ईंटों के बीच का चूना यदि भुरभुरा कर निकल जाए तो दुबारा चूना लगा कर उनके जुड़ाव को मजबूत कर दिया जाता है, उसी प्रकार यदि मानव और मानव के बीच का स्नेह रूपी चूना भुरभुरा हो गया हो तो उस खाली हुई जगह को पुन: प्यार से भरने की ज़रूरत है, न कि एक-दो पर दोषारोपण करने की,

एक-दो के प्रति दुर्भावना जागृत करने की और एक-दो के दिलों को खट्टा करने की। ईंटें जड़ होती हैं, उनके भुरभुरे चूने को वे स्वयं दुबारा नहीं लगाती, मानव लगाता है और मानव तथा मानव के बीच समाप्त हुए प्रेम की पूर्ति भगवान करता है बशर्ते कि मानव ईंटों की तरह अपने को ईश्वराज्ञा पर समर्पित कर दे। रहीम जी का सुन्दर दोहा है –

रूठे सुजन मनाइये
जो रूठें सौ बार।
रहिमन फिर-फिर पोइये
टूटे मुक्ताहार।।

भावार्थ यह है कि कीमती मोतियों से बने हार के टूट जाने पर जैसे हम पुन: पिरो लेते हैं, मोतियों को फेंकते नहीं हैं, इसी प्रकार हमारे स्नेहीजन, प्रियजन, पावनजन, पूरे कल्प साथ रहने वाले भविष्य देवजन, उनको भी हमें ठुकराना नहीं चाहिए, पुन: समझा-बुझा लेना चाहिए, एकता के नए धागों में पुन: पिरो लेना चाहिए। बिखरे मोतियों को पुन: पिरोने के लिए आवश्यकता है सहनशीलता और आत्मविश्वास की, व्यक्ति को दोष देने के बजाए जीवन की दिशा और दृष्टिकोण बदलने की। बहती हुई नदी, चट्टान के सामने आने पर न तो बहना छोड़ती है और न ही चट्टान के साथ मनमुटाव करती है, और ही उसके चरण धोती हुई, थोड़ी-सी दिशा बदलती है और मंजिल की ओर बढ़ती जाती है। हमें भी अवरोधों को सलाम करते हुए सम्पूर्णता की मंज़िल की ओर बढ़ते जाना है।

जीवन में बहुत कुछ खो जाता है, गम्भीर बीमारी के अचानक आ जाने पर लाखों रुपये खर्च हो जाते हैं। इसी प्रकार किसी के साथ मीठा सम्बन्ध यदि बीमार सम्बन्ध में बदल गया और उसमें बहुत बड़ी आर्थिक हानि हो गई तो इसे भी एक नई प्रकार की बीमारी पर हुआ खर्च मान कर सह लेना चाहिए।

उड़ने के पंख – आत्मविश्वास और ईश्वर विश्वास

हिम्मत हारना, उदास होना, निराश होना, अपने से बड़ों या छोटों या समान पद वालों को कोसना, दूसरों पर दोष थोपना, ये सब आत्म-घात और आत्म-हनन के रास्ते हैं। एक बार एक धनी व्यक्ति का मकान और दुकान जल कर राख हो गए। सहानुभूति जताने वालों का ताँता लग गया, जो उसे फूटी आँख नहीं सुहा रहा था। उसने जली इमारत की राख पर एक बोर्ड लगवा दिया, जिस पर लिखा था – मकान जल गया, दुकान जल गई पर आत्मविश्वास नहीं जला। सहानुभूति जताने वाले, बोर्ड को पढ़ते और गर्दन झुका कर लौट जाते। अगर विश्वास का महल खड़ा है तो स्थूल महल जलने पर भी कोई मुश्किल आने वाली नहीं है। अत: अपने खोए हुए धन और सम्बन्ध तथा बीमार तन को बार-बार याद करने के बजाए अपने आत्मविश्वास और सर्वशक्तिवान परमात्मा पर अपने विश्वास को टटोलिए। अगर ये दोनों सलामत हैं तो मानवों का विश्वास स्वत: हासिल हो जायेगा। चाणक्य से किसी ने पूछा था – इतने बड़े साम्राज्य के प्रधानमंत्री होकर भी आप झोंपड़ी में रहते हैं? आपको तो आलीशान प्रासाद में रहना चाहिए। चाणक्य का उत्तर था – जनता के दिल में मेरे प्रति जो विश्वास है, वही मेरा गगनचुम्बी प्रासाद है, जिस दिन वो मिट जाएगा तब मैं समझूँगा कि मेरा प्रासाद ढह गया। जब तक वह कायम है, मेरा गगनचुम्बी महल कायम है। अत: एक ही धुन लगाइये कि मैं आत्मविश्वास का धनी हूँ, मैं ईश्वर में अटूट विश्वास का धनी हूँ। आत्मविश्वास और ईश्वर विश्वास – ये दो मेरे पंख हैं जिनके सहारे मैं हर ऊँचाई को छू सकता हूँ, हज़ारों नए रास्ते निर्मित कर सकता हूँ, समस्याओं से उफनते सागर को पार कर सकता हूँ और सम्बन्धों में रस भर कर संगठन के किले का मजबूत स्तम्भ बन सकता हूँ।

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश

जो दूसरों से मिलजुल कर चलता है वही जीने की कला जानता है।

पुरुषोत्तम संगमयुग और समाजवाद

–ब्रह्माकुमार रमेश शाह, गामदेवी (मुम्बई)

आज विश्व एक वैश्विक गाँव बन गया है और उसके साथ-साथ परमपिता परमात्मा शिव ने एक वैश्विक दैवी परिवार की परिभाषा भी हम बच्चों को दी है। हम इस दैवी परिवार में कैसे कार्य-व्यवहार करें, उसका भी ज्ञान दे रहे हैं। वैश्विक स्तर पर एक समान जीवन पद्धति के लिए एक समान संस्कार बनाने का जो कार्य परमात्मा के द्वारा हो रहा है, वह अद्वितीय है। इससे विश्व में एक धर्म, एक राज्य, एक भाषा आदि-आदि होगी, यह हम जानते हैं। आज विश्व में 600 करोड़ के लगभग मनुष्यात्मायें हैं, उसकी भेंट में सतयुग के आदि में बहुत कम अर्थात् 9-10 लाख ही मनुष्यात्मायें होंगी जिसके कारण वहाँ का कारोबार बहुत सहज हो जायेगा। वैश्विक स्तर पर योग्य व्यक्तियों का निर्माण करने के लिए अभी संगमयुग पर परमात्मा ज्ञान, योग, धारणा और सेवा के चार विषय सबको सिखा रहे हैं। उस अनुसार पुरुषार्थ करके अन्तिम परीक्षा में सफल होने वाली आत्माओं को ही सतयुग के आदि रत्नों की भूमिका निभाने का सौभाग्य मिलेगा। इस संगमयुग की पढ़ाई और पुरुषार्थ के आधार पर ही सतयुगी श्रेष्ठ सृष्टि के श्रेष्ठ पदाधिकारियों का निर्माण होगा। सतयुग में राजधानी होगी, इसलिए वहाँ सब प्रकार के पदाधिकारी और कार्य करने वाले लोग भी अवश्य होंगे, वे भी अभी के पुरुषार्थ के आधार पर ही बनेंगे।

आज के विश्व में भिन्न-भिन्न पदाधिकारियों और व्यक्तियों के बीच जो ईर्ष्या-द्वेष आदि रहता है, वह वहाँ नहीं होगा। सारा विश्व एक परिवार के रूप में कार्य करेगा, इसका आधार पुरुषोत्तम संगमयुग का यह समाजवाद है। आज ऐसी मान्यता है कि समाजवाद में सबकी एक समान आमदनी हो और सबको एक समान सुख-सुविधायें उपलब्ध हों। परन्तु परमात्मा ने जिस आध्यात्मिक समाजवाद के विषय में हमको बताया है उसके अनुसार इस विविधतापूर्ण विश्व नाटक की शोभा ही इसकी विविधता है, इसलिए भौतिक दृष्टि से तो सब में समानता नहीं हो सकती परन्तु आध्यात्मिक दृष्टि से इस समाजवाद में सबके एक समान सतोप्रधान संस्कार होंगे और सबकी दृष्टि-वृत्ति और कृति सतोप्रधान होगी, जिसके कारण सबके जीवन में समान रूप से सुख-शान्ति अवश्य होगी। यह बात अभी यहाँ से ही सिद्ध होती है कि परमपिता परमात्मा सबको एक समान ज्ञान, योग, धारणा और सेवा का अवसर प्रदान करते हैं। इसके लिए प्यारे बापदादा ने अनेक बार मुरलियों में कहा है – **बाबा सबको एक समान ही ज्ञान देते हैं, पढ़ाई पढ़ाते हैं परन्तु धारणा करने में सब नम्बरवार हो जाते हैं। परमात्मा नम्बरवार ज्ञान नहीं देते हैं परन्तु पुरुषार्थ के कारण नम्बरवार हो जाते हैं। अपने पुरुषार्थ के आधार पर हर एक को अपने पद और प्राप्ति का भी पता चल जाता है। जब हम साक्षी होकर अपने पुरुषार्थ को देखते हैं तो क्या कमी है, कहाँ पर ढीलापन है, उसका भी पता चल जाता है। जिसको लक्ष्य होता है, ध्यान होता है, वही अपना सुधार भी कर सकता है।**

ऊँच पद पाने में समय महत्त्वपूर्ण नहीं है बल्कि जो जब से आया तब से उसका पुरुषार्थ कैसा रहा, वह महत्त्वपूर्ण है। श्रेष्ठ पद पाने की इस दौड़ में अन्त तक आगे-पीछे होते ही रहेंगे। परमात्मा सबको एक समान ज्ञान और आगे बढ़ने का अवसर देते हैं, यह एक अद्वितीय बात है। परमात्मा सबको समान दृष्टि से देखते हैं, उनकी दृष्टि में कोई भेदभाव नहीं है, परमात्म के इस कर्त्तव्य से सिद्ध होता है अर्थात् उनके इस कर्त्तव्य से ही महानता, श्रेष्ठता, समदर्शीपन सिद्ध होता है। वर्तमान दुनिया के समाजवाद में जो अधिक कमाई का पुरुषार्थ करता है, उसको विशेष टैक्स देना होता है। इस समाजवाद में ऊँच-नीच,

छोटे-बड़े की विविधता को दूर करने के विधि-विधान कभी-कभी मनुष्य को पुरुषार्थहीन बना देते हैं। दक्षिण भारत के एक सम्पन्न व्यक्ति की मृत्यु हुई तब उसके वारिसों पर इतना मृत्यु-कर भरने के लिए आया कि दिवंगत की सारी मिल्कियत बेचनी पड़ी और उस पर भी पूँजी अर्जित कर भरना पड़ा। दोनों कर मिलाकर उस दिवंगत की समग्र सम्पत्ति से भी ज़्यादा हो गये। अंक-आँकड़ों के रूप में देखें तो अगर दिवंगत की सम्पत्ति 100 रुपया थी तो उस पर जो कर लगा वह 107 रुपया हो गया अर्थात् उसके वारिसों को अपने पिता जी से वर्से में सम्पत्ति तो नहीं मिली परन्तु उनको अपनी स्वयं के द्वारा अर्जित सम्पत्ति से 7 प्रतिशत रकम और खर्च करनी पड़ी। ऐसी विषमता भारत में समाजवाद के नाम पर थी। बाद में प्रधानमंत्री ने उस कानूनी पद्धति में परिवर्तन किया और नई पद्धति के अनुसार किसी दिवंगत की सम्पत्ति पर समाजवाद के नाम पर मृत्यु-कर अधिक-से-अधिक शत-प्रतिशत ही लगाया जा सकता है।

परमपिता परमात्मा की इस संगमयुगी आदर्श आध्यात्मिक समाजवादी व्यवस्था पर विचार करें तो उसमें ऐसी कोई बात नहीं है। परमात्मा ने इस दैवी परिवार में आने वाली हर आत्मा को श्रेष्ठ पद पाने के समान अवसर दिये हुए हैं और कोई भी आत्मा तन-मन-धन में से जो भी उसके पास है, को यज्ञ-सेवा में सफल कर पद श्रेष्ठ बना सकती है। बाबा ने न केवल इस आदर्श समाजवादी विधि-विधान की थ्यौरी बताई है परन्तु उसके प्रैक्टिकल प्रत्यक्ष आदर्श उदाहरण भी दिखाये हैं। धन की दृष्टि से साधारण परिवार से आई मातेश्वरी जी ने भी अपने पुरुषार्थ के आधार पर उनके समान ही प्रथम श्री लक्ष्मी का पद पाया।

परमात्मा के इस समाजवाद में व्यक्ति की पारिवारिक स्थिति, जाति-पाति का भी कोई महत्त्व नहीं है। परमात्मा के इस परिवार में, जो भी आत्मा जिस समय और जैसे भी परिवार से आती है, परमात्मा उसको उसी रूप में स्वीकार कर लेते हैं अर्थात् वे उसके उस क्षण से पिछले जीवन पर विचार नहीं करते। उसको श्रेष्ठ पद पाने का अवसर देते हैं। यदि कोई माता बंधन में है तो भी बाबा कहते हैं कि वह निर्बन्धन से अच्छा पद पा सकती है क्योंकि बाँधेलियों की लगन परमात्मा के साथ अधिक होती है, उस लगन के आधार पर उनका पद बनता है। भाषा के आधार पर कोई भेदभाव नहीं है। इस सम्बन्ध में अव्यक्त बापदादा ने 22.11.87 की मुरली में कर्नाटक वालों को बहुत ही सुन्दर बात कही। बाबा ने कहा कि कर्नाटक वाले भले ही भाषा नहीं समझते लेकिन वे भावना की भाषा समझने में नम्बरवन हैं।

इस आध्यात्मिक समाजवाद में स्थान के आधार पर भी कोई बंधन नहीं है क्योंकि सभी स्थानों पर एक ही मुरली पढ़ी जाती है और सभी स्थानों के भाई-बहनों की सेवा कर श्रेष्ठ पद पाने का समान अवसर है। उदाहरणार्थ एक मुरली में साकार बाबा ने कहा – बड़े-बड़े बोर्ड बनाने चाहिएँ तो एक विदेश के भाई ने अपने शहर में एक 40 फुट बाई 20 फुट का बड़ा बोर्ड बनाया। मैंने उससे पूछा कि आपने इतना बड़ा बोर्ड क्यों बनाया है ? तब उसने कहा – बाबा कहते हैं कि बड़े-बड़े बोर्ड बनाने चाहिएँ, जिससे लोग दूर से ही पढ़ सकें इसलिए मैंने इतना बड़ा बोर्ड बनाया है। उसके उत्तर को सुनकर मुझे महसूसता हुई कि बाबा का ज्ञान तो सबको एक समान ही मिलता है परन्तु धारण करने और व्यवहार में लाने में सब नम्बरवार हैं।

इसी तरह बाबा कहते हैं – अपना सब तन-मन-धन सफल करो परन्तु सफल करने में सब नम्बरवार हैं। कोई बाबा की श्रीमत समझ कर तुरंत दान महापुण्य के आधार पर बिना कोई विचार किये सब सफल कर देते और तुरन्त महापुण्य के अधिकारी बन जाते, जैसे ब्रह्मा बाबा ने किया। कोई कुछ सोच-विचार कर सफल करते और कई तो कहने पर भी नहीं करते। सेवा करने वालों में

भी कई तो जो ड्यूटी मिलती उसको सहर्ष स्वीकार करते हैं, दिल से सेवा भी करते हैं और अपनी स्थिति भी बनाते हैं। एक सम्पन्न और पढ़े-लिखे भाई को पाण्डव भवन में पहरे पर सेवा का कार्य मिला। मैंने उससे कहा – आपको कोई बैठकर की जाने वाली सेवा की ड्यूटी दे दें, तो उसने कहा – मुझको ये जो सेवा मिली है, यह बहुत अच्छी है क्योंकि इसमें पाण्डव भवन में चारों ओर घूमना पड़ता है, जिससे हमको जो पेट आदि की परेशानी थी, वह ठीक हो गई और इसमें बाबा की याद भी अच्छी रहती है।

इस संगमयुग पर हमको आगे बढ़ने का जो स्वर्णिम अवसर एक बार मिलता है, वह दुबारा वैसा नहीं मिलता। जो उस अवसर का लाभ उठाते, उनको बाबा बख्तावर कहते हैं। भक्ति में भी गायन है कि कई बार जब लक्ष्मी तिलक करने के लिए आती है तो कई उस समय मुँह धोने चले जाते हैं। ज्ञान में चलने और आगे बढ़ने में परीक्षा के रूप में विषम परिस्थितियाँ भी सबके सामने आती हैं। जो उनको परीक्षा समझ कर पार कर लेते, वे आगे चले जाते हैं। ऐसे ही स्वभाव-संस्कार का परिवर्तन करने की बात है। जो परिवर्तन कर लेते वे समर्पित जीवन में सफल हो जाते हैं और श्रेष्ठ पद के अधिकारी बन जाते हैं। एक आत्मा कुछ समय समर्पित जीवन व्यतीत करके फिर चली गई, पूछने पर उसने कारण बताया कि मैं अपने नाजुक संस्कार पर जीत नहीं पा सका, इसलिए मुझे समर्पित जीवन छोड़ देना पड़ा।

मैंने संगमयुग के क्रमबद्ध लेखों में संगमयुग की श्रेष्ठता का वर्णन किया है क्योंकि यह पुरुषोत्तम संगमयुग सर्वश्रेष्ठ है। विश्व की 600 करोड़ से अधिक आत्माओं में से हम कुछ थोड़ी-सी आत्माओं को यह सुअवसर मिला है। इसकी श्रेष्ठता को समझ कर हम सब इसका लाभ उठायें, यही मेरी शुभेच्छा है। ❑

हर दिन दीवाली

दीवाली रोज मनायेंगे, दीप खुशियों के जलायेंगे,
रावण के संग धू-धू करके जलेगी लंका सारी।
अब जल्दी ही भड़क उठेगी प्रलय की चिंगारी।।
कुपित प्रकृति के पाँचों तत्व भी ऊधम मचायेंगे,
दीवाली रोज मनायेंगे.....

यह संगमयुग परिवर्तन वेला, दुनिया सारी सोई पड़ी है।
वही कयामत का मौसम है, अब फिर आई वही घड़ी है।।
नश्वर दुनिया, नश्वर सम्बन्ध साथ नहीं चल पायेंगे,
दीवाली रोज मनायेंगे.....

फिर यह दुनिया स्वर्ग बनेगी, होंगी नई बहारें।
पावन दुनिया कंचन काया, झिलमिल सभी नजारे।
खिलती कलियाँ, गाते पंछी मन को लुभायेंगे।
दीवाली रोज मनायेंगे.....

दु:ख का नामोनिशान न होगा, चारों तरफ खुशहाली।
जैसे रोज मनायें होली, हर रात सजे दीवाली।।
रास रचायेंगे, खुशी में जश्न मनायेंगे।
दीवाली रोज मनायेंगे.....

परमपिता शिव ने हमें जगाया, हम दुनिया को जगायें।
राजयोग की शमा जला, अंधियारा दूर भगायें।।
अमृत बरसायेंगे, मनुष्य को देव बनायेंगे।
दीवाली रोज मनायेंगे.....

ब्रह्माकुमार राजवीर, बड़ौत

रावण दहन का आध्यात्मिक रहस्य

–ब्रह्माकुमार त्यागी, शक्तिनगर (दिल्ली)

भारत में हर वर्ष रावण के लाखों पुतले जलाये जाते हैं। सभी लोग जानते हैं कि पुतला हमेशा दुश्मन का ही जलाया जाता है और वह भी तब जबकि दुश्मन ज़िन्दा हो। पुतला जलाने वाले हमेशा यह भी कोशिश करते हैं कि दुश्मन के घर या दफ्तर आदि के सामने ही जलायें ताकि उसे अपनी ग़लतियों का अहसास हो। मर जाने के बाद किसी का भी पुतला नहीं जलाया जाता। इस बात से सिद्ध है कि रावण अभी मरा नहीं है। इस प्रकार की भी रस्म है कि रावण का पुतला हर वर्ष पिछले वर्ष की भेंट में कुछ लम्बा बनाया जाता है अर्थात् रावण हर वर्ष बड़ा होता जा रहा है।

रावण के पुतले के दस सिर बनाये जाते हैं और उन सिरों के ऊपर एक गधे का सिर भी लगाते हैं। ऐसी मान्यता है कि रावण लंका का राजा था, वह बहुत बड़ा पण्डित, विद्वान और वैज्ञानिक भी था। कहा जाता है कि रावण ने विज्ञान की शक्ति से प्रकृति को भी अपने अधीन कर लिया था परन्तु इतना सब होते हुए भी उसको नाम राक्षस ही दिया जाता है। इस बात को रामचरितमानस में इस प्रकार कहा गया है –

काम, क्रोध, मद, लोभ की
जब तक घट में खान,
पण्डित हो या मूर्खा
तुलसी एक समान।

इसका अर्थ यह है कि मनुष्य चाहे कितना ही बड़ा राजा, पण्डित, विद्वान, वैज्ञानिक क्यों न हो अगर उसके जीवन में काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार रूपी पाँच विकार हैं तो वह मूर्ख अथवा राक्षस ही माना जायेगा। इसी बात की निशानी के रूप में रावण के सिर पर गधे का सिर दिखाया जाता है। अत: रावण के ये दस सिर कलियुगी समाज में विकारों से ग्रस्त नर-नारियों के प्रतीक हैं। पाँच विकार पुरुष के, पाँच विकार स्त्री के, दोनों को मिला कर दस सिरों के रूप में दिखाये जाते हैं। विकार मन में संकल्पों के रूप में जागृत होते हैं और मन का निवास आत्मा में, मस्तक के बीच भृकुटि में है। मन अति सूक्ष्म है, उसका चित्र बनाया ही नहीं जा सकता इसलिए चित्रकार ने मस्तक को ही विकारों का रूप देकर दस सिर बनाये हैं।

रावण शब्द पाली भाषा का है जिसका अर्थ है रुलाने वाला या दु:ख देने वाला। देखा जाये तो पाँच विकार ही मनुष्य के सबसे बड़े दुश्मन हैं जो सदा दु:ख देते रहते हैं अथवा रुलाते रहते हैं। इससे स्पष्ट है कि पाँच विकारों का प्रतीक ही है रावण।

सीता अपहरण का अर्थ भी बड़ा गूढ़ है। जब आत्मा जीवन की पवित्र मर्यादाओं की रेखा को अर्थात् लक्ष्य रूपी लक्ष्मण-रेखा को, मृगतृष्णा रूपी सोने के हिरण के लालच में फँसकर

पार कर जाती है अर्थात् मर्यादाओं को तोड़ देती है तो पाँच विकारों रूपी रावण की जेल में कैद हो जाती है। ऐसी आत्माओं को सर्वशक्तिवान, मुक्तिदाता, निराकार परमात्मा राम ही रावण की जेल से मुक्त करते हैं। राम शब्द निराकार परमपिता परमात्मा के लिये ही प्रयोग किया गया है। लंका भारत के दक्षिण में एक टापू है। वहाँ के इतिहास में रावण नाम के किसी राजा का वर्णन नहीं है। अत: लंकावासी, रामायण के साथ लंका के सम्बन्ध को ऐतिहासिक नहीं मानते। वास्तविक अर्थ यही है कि आज पृथ्वी के चारों ओर सागर-ही-सागर है और सारी दुनिया ही लंका यानि रावण राज्य बनी हुई है जिस पर रावण अर्थात् पाँच विकारों का ही साम्राज्य है क्योंकि दुनिया के सभी मनुष्य काम,

क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष आदि विकारों के अधीन होकर एक-दूसरे को दु:ख देने वाले अर्थात् रुलाने वाले ही हैं। इसी कारण से वर्तमान समय में सारी दुनिया में दु:ख और अशान्ति फैली हुई है। रामचरितमानस के उत्तराखण्ड के चालीसवें दोहे में रावण अर्थात् राक्षसों के अवगुणों का वर्णन करते हुए लिखा गया है –

ऐसे अधम मनुज खल
सतयुग त्रेता नाहिं,
द्वापर कछुक बृन्द
बहु होहीं कलियुग माहि।

भावार्थ है कि रावण जैसे अधम, खल मनुष्य सतयुग और त्रेतायुग में होते ही नहीं, द्वापरयुग में कुछ थोड़े होते हैं और कलियुग में बहुत सारे रावण-ही-रावण होते हैं अर्थात् कलियुग में सभी मनुष्य विकारों के अधीन हो जाते हैं। इससे सिद्ध है कि रावण का सारा वृत्तान्त कलियुग के अन्तिम समय का ही है जबकि दुनिया के सभी नर और नारी काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार के अधीन होकर कर्म भ्रष्ट और धर्म भ्रष्ट बनकर अपने जीवन की पवित्र धारणाओं और मर्यादाओं को छोड़ देते हैं और सारे संसार में विकारों अर्थात् रावण का ही साम्राज्य हो जाता है। इसको ही रावण राज्य कहते हैं।

वास्तव में सृष्टि-चक्र में सतयुग और त्रेतायुग को रामराज्य कहा जाता है जिसकी शास्त्रों में बेहद महिमा वर्णन की गई है। कहा जाता है कि रामराज्य में घी, दूध की नदियाँ बहती हैं। शेर, बकरी भी एक घाट पर पानी पीते हैं, वहाँ पर सोने-चाँदी के महल होते हैं, वहाँ न पुलिस होती है, न फौज, न डॉक्टर, न अस्पताल होते, न ही वकील, जज और अदालतें होती हैं। सभी मनुष्य निर्विकारी और पवित्र होने के कारण वहाँ सम्पूर्ण सुख-शान्ति होती है। गाँधी जी भी ऐसे ही रामराज्य का स्वप्न देखा करते थे। रामराज्य की भेंट में द्वापरयुग और कलियुग को रावण राज्य कहते हैं जहाँ सभी मनुष्य विकारों के अधीन होने के कारण एक-दूसरे को दु:ख देते हैं अर्थात् रुलाते रहते हैं। जहाँ हर प्रकार के भौतिक सुखों के साधन होते हुए भी घर-घर में लड़ाई-झगड़ा, कलह-क्लेश और दु:ख-अशान्ति फैली होती है और समाज में भ्रष्टाचार, दुराचार, मिलावट, रिश्वतखोरी आदि-आदि बुराइयों का तूफान उमड़ा हुआ होता है। झूठ, कपट, बेईमानी, अत्याचार और दुराचार का बोलबाला होता है। ऐसे ही समय के लिए रामायण में लिखा है –

जब-जब होत धर्म की हानि
बाढ़े अधम, असुर, अभिमानी,
तब-तब धरें प्रभु मनुष्य शरीरा।

अर्थात् जिस समय संसार में अति धर्मग्लानि हो जाती है, मनुष्य अधम और असुर बन जाते हैं तब ही जन्म-मरण से न्यारे, सर्वशक्तिवान, निराकार प्रभु, जिनको विश्व-कल्याणकारी होने के कारण शिव नाम से याद किया जाता है और अति रमणीक और सुख-शान्ति के दाता होने के कारण राम नाम से भी याद किया जाता है, फिर से साधारण मनुष्य के शरीर को धारण करते हैं।

यदि गहराई से विचार किया जाये तो स्पष्ट दिखाई देता है कि सृष्टि-चक्र में वर्तमान समय फिर से कलियुग के अन्त का समय आ पहुँचा है और सभी धर्मग्रन्थों में कथित कलियुग अन्त की सभी निशानियाँ भी प्रत्यक्ष दिखाई दे रही हैं। श्रीमद्भगवत्गीता में भी इसको अति धर्मग्लानि का समय कहा गया है। सर्वशक्तिवान, पतित पावन, निराकार, विश्व-कल्याणकारी परमात्मा शिव जिनको राम शब्द से भी याद किया जाता है, कल्प पूर्व की भाँति फिर से सृष्टि पर अवतरित होकर, प्रजापिता ब्रह्मा के साधारण मनुष्य तन में प्रवेश करके ईश्वरीय ज्ञान एवं राजयोग की शिक्षा के द्वारा नई सतयुगी सृष्टि की स्थापना करा रहे हैं। संसार में फैले हुए अधर्म के अन्त के लिये ही विश्व में चारों ओर काले बादल मंडरा रहे हैं अर्थात् रावण दहन की तैयारी भी हो रही है।

अत: रावण दहन के वास्तविक अर्थ को समझ कर ईश्वरीय ज्ञान और राजयोग की शिक्षा द्वारा अपने जीवन से काम, क्रोध आदि विकारों को भस्म कर, पवित्र और निर्विकारी बन कर आने वाले रामराज्य में ईश्वरीय जन्म-सिद्ध अधिकार 2500 वर्षों के लिए प्राप्त करें। अभी नहीं तो कभी नहीं।

'पत्र' सम्पादक के नाम

"ज्ञानामृत" पत्रिका सर्वश्रेष्ठ पत्रिका है। इसको पढ़ने से तन-मन में एक अद्भुत शक्ति का संचार होता है। ज्ञानामृत एक एन्टीबायोटिक है जो विकारों के कीटाणुओं को फैलने से बिल्कुल ही रोक देती है। यह अध्यात्म मार्ग के यात्री के लिए सच्चा यात्रा भोजन है जिसे ग्रहण करके वह शक्तिशाली बनकर सहज ही मंजिल की ओर बढ़ने लगता है। ज्ञानामृत में छपने वाला हर लेख मार्मिक, हृदयस्पर्शी एवं प्रभावशाली रहता है। लेख केवल लेख ना होकर ऐसा अनुभव होता है जैसे कि कोई दृढ़ चरित्रवान व्यक्ति बोल रहा है। इसका हर लेख ज्ञान मार्ग में तेजी से आगे बढ़ने एवं चरित्रवान बनने की प्रेरणा देता है। सुन्दर कविता, ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक लेख लिखने के लिए ज्ञानामृत-परिवार को हार्दिक बधाई एवं ढेर सारी शुभकामनायें। साथ ही ज्ञानामृत के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

– ब्रह्माकुमार दादुराम,
रायपुर(छत्तीसगढ़)

-+-+-+-+-+-+-+-+-+-+-+-+-+-+-

जुलाई 2005 की ज्ञानामृत में "फैशन का फंदा" वास्तव में सराहनीय है। जिन लोगों ने आधुनिकता की अंधी दौड़ में सहजता और शालीनता का लिबास उतार फेंका है, जो लोग अपनी श्रेष्ठ संस्कृति की हत्या करने में सुख अनुभव करते हैं, उनकी दशा और दिशा बदलने में यह सहायक है। आज समाज को ऐसे ही लेखों द्वारा पथभ्रष्ट होने से बचाया जा सकता है। लेख के माध्यम से शिक्षा मिलती है कि जीवन की वाटिका को आत्मज्ञान से, दिव्य गुणों से और पुरुषार्थ के सुमनों से सजाना है, फैशन से नहीं।

– विमला सैनी,
मुण्डका(दिल्ली)

-+-+-+-+-+-+-+-+-+-+-+-+-+-+-

जुलाई 2005 के अंक में दादी प्रकाशमणिजी का संदेश व सम्पादकीय लेख "फैशन का फंदा" इतना प्रेरणादायक है कि यदि हम उस पर ध्यान देवें तो बहुत बुराइयों से बचा जा सकता है। आज के भौतिक युग में फैशनेबल पहनावे से कई अपराधिक कार्य हो रहे हैं। आज की युवा लड़कियों का पहनावा इतना आकर्षण युक्त रहता है कि बाद में उसका बहुत बड़ा दण्ड उनको भुगतना पड़ता है। आज पालक वर्ग भी इसमें कम ज़िम्मेदार नहीं है। समय पर जो न चेता उसे बहुत ही दु:खों का सामना करना पड़ता है। ऐसे सैंकड़ों उदाहरण सामने हैं। साधन उतने ही प्रयोग करें जो कि आवश्यक हैं न कि आकर्षण के लिए।

– सुरेश सोजतिया, अकोला

-+-+-+-+-+-+-+-+-+-+-+-+-+-+-

जुलाई 2005 के ज्ञानामृत में सम्पादकीय लेख "फैशन का फंदा" पढ़ा। पढ़कर काफी अच्छा लगा। पुराने दिनों की याद ताजा हो गई। मैं सीधेसादे कपड़ों में कालेज जाता था, तब दोस्तों के मज़ाक का पात्र बन जाता था परन्तु मेरे सिद्धान्तों के कारण मैं कभी फैशन के फंदे में नहीं फंसा। यह लेख पढ़कर हृदय को अति शांति का अनुभव हुआ तथा कॉलेज के समय में मैं सही था, इसका प्रमाण मुझे प्राप्त हुआ। यह लेख समाजोपयोगी है, अन्य लेख भी प्रशंसनीय हैं। इसके लिए आत्म प्रकाश भाई तथा ज्ञानामृत परिवार सहित ब्रह्माकुमारी परिवार को कोटिश शुभकामनाएँ, धन्यवाद एवं आभार।

– मनोज कुमार साहू,
सरिया, रायगढ़ (छत्तीसगढ़)

★

ठीक हूँ, दूसरे मुझे नहीं जानते लेकिन एक दिन सभी मुझे पहचानेंगे। आगे चलकर देखना क्या होता है – यह स्वयं को धोखा देने वाली अलबेलेपन की मीठी निद्रा है। निश्चित कार्य योजना व समय प्रबन्धन का अभाव भी अलबेलेपन के कारण हैं। इतने समय में हमें यह कार्य पूर्ण कर लेना होगा अन्यथा कार्य का कोई प्रयोजन नहीं रह जायेगा – जब इस तरह के दृढ़ संकल्प व समय की समाप्ति का ध्यान होगा तो अलबेलापन समाप्त हो जायेगा। ऐसे में, हर कार्य की निश्चित समायावधि, हमें समय पर कार्य पूर्ण करने के लिए सचेत करती रहेगी। कई लोग, पल-पल बीतते जा रहे समय, जीवन की क्षणभंगुरता तथा कर्मनिष्ठता व भाग्य निर्माण के प्रति उदासीन रहते हैं। कभी-कभी अति उत्साही व अति आत्म-विश्वासी प्रकृति भी धोखा दे सकती है। इसी प्रकार थकावट की रट लगाना, व्यस्तता का बहाना देना, आराम पसन्दी का तकिया लगा कर सोने में अधिक समय देना या फिर व्यर्थ में समय की पूँजी बर्बाद करना, ये भी अलबेलेपन के अनेक मुखौटे हैं।

आलस्य जीवित व्यक्ति की मृत्यु है

यह कथन अक्षरश: सत्य है। मृत्यु तो परिवर्तन मात्र है, उसमें भी प्रवाह है किन्तु आलस्य तो ठहरा हुआ गंदा पानी है। महात्मा बुद्ध का कहना है जैसे काई से ढके पानी में मनुष्य अपना प्रतिबिम्ब नहीं देख सकता, इसी प्रकार जिसका चित्त आलस्य से पूर्ण होता है वह अपना हित नहीं समझ सकता, फिर दूसरों का हित भला क्या समझेगा। महात्मा गाँधी आलस्य को हिंसा मानते हैं, जो मनुष्य स्वयं पर करता है। वेदों में कहा गया है – आलस्य दरिद्रता का मूल है। सुकरात इससे भी आगे कहते हैं, जो कुछ नहीं करता, वही आलसी नहीं है, आलसी वह भी है जो अपने काम से भी अच्छा काम कर सकता है, परन्तु करता नहीं।

छोड़ो तो छूटो

दिनोंदिन बढ़ती जा रही समस्यायें, विकृतियाँ एवं विनाशकारी प्रवृत्तियां समय की समाप्ति की सूचना दे रही हैं। पल-पल प्रलय व परिवर्तन की प्रतीक्षा में है हमारी पृथ्वी। ईश्वरीय महावाक्यों में देहभान से मुक्त होने व देही अभिमानी स्थिति धारण करने, पुरानी देह व दुनिया को विस्मृत कर नई दुनिया से मन को जोड़ने के संकेत मिल रहे हैं। संस्कारों का परिष्कार व अहंकार का बहिष्कार कर ईश्वरीय याद में मग्न रहने तथा सेवा से सबकी दुआयें लेने का यह संगमयुग बीतता जा रहा है। अत: अब अपने ज्ञानी होने, पुरुषार्थी कहलाने व स्वयं को अनुभवी व पुराना समझने की राग आलापना बंद करना होगा। आरामतलबी व सुस्ती पसंदी की आदत को छोड़ना होगा और नये उमंग-उत्साह के पंखों से उड़ती कला में उड़ना-उड़ाना होगा। पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा का अथक पुरुषार्थ, अभी-अभी कार्य को पूर्ण करने-कराने की दृढ़ता व लगन, अद्भुत उमंग-उत्साह, वयोवृद्ध होते, गजब की स्फूर्ति व चुस्ती एवं अलौकिक शक्तिशाली स्थितप्रज्ञ अवस्था हम सबके लिए आदर्श प्रेरणा है। आइये, आलस्य व अलबेलेपन के शत्रुओं को समाप्त करने के लिए उद्योग व योग करें ताकि सभी निर्विघ्न अभिष्ट लक्ष्य पर पहुँच सकें। ▲▲

भिवानी (हरियाणा)- नये भवन "सिद्धीधाम" का उद्घाटन करते हुए स्वामी वेदनाथ जी, ब्र.कु. नारायणी बहन तथा अन्य ।

ओमशान्ति ऑडियो चैनल

इस चैनल पर प्रसारित होने वाले मुख्य कार्यक्रम

- अमृतवेला शुद्ध पवन
- ब्रह्म मुहूर्त
- संगीत सौंदर्य
- ओम् ध्वनि
- स्वर्णिम प्रभात
- आज का सुविचार
- राजयोग प्रवचन माला
- दिव्य गीत माला
- गोल्डन टिप्स, तनाव मुक्त जीवन
- वसुधैव कुटुम्बकम्
- जीवन मूल्य
- गीत सरिता
- सम्पूर्ण स्वास्थ्य
- नारी तू कल्याणी
- अच्छे बच्चे
- युवा बनें शान्ति दूत
- विश्व दर्शन (नाटक)

प्रतिस्पर्धा के इस युग में तनावपूर्ण वातावरण में मानव मन को प्रसन्नता व उत्साह से भरपूर करने के लिए आध्यात्मिकता की उपयोगिता को विभिन्न कार्यक्रमों द्वारा स्पष्ट करके स्वीकार्य रूप में पेश करने वाले ओमशान्ति ऑडियो चैनल की अद्भुत प्रस्तुति अब डीटीएच. के माध्यम से प्रतिदिन 24 घण्टे।

आध्यात्मिक शक्तियों द्वारा नव चेतना संचारित करने वाले कार्यक्रम, उमंग-उत्साह की पुन: अभिवृद्धि के विशेष नुस्खे, आत्मा की उन्नति के लिए आध्यात्मिक प्रवचन, विश्लेषण तथा विचारोत्पादक सुन्दर परिचर्चा और भारतीय संस्कृति की झलक के रूप में मनभावन मधुर संगीत के कार्यक्रमों की सौगात आप तक पहुँचाने वाला भारत का प्रथम सम्पूर्ण आध्यात्मिक ऑडियो चैनल है – ओमशान्ति ऑडियो चैनल। सार्क देशों व दुबई में डीटीएच के माध्यम से ओमशान्ति ऑडियो चैनल द्वारा कार्यक्रम किये जा रहे हैं।

इन कार्यक्रमों के अन्य प्रसार माध्यमों द्वारा उपयोग के लिए आप साउण्ड विभाग, शान्तिवन से सी.डी. प्राप्त कर सकते हैं। आप अपने सहयोगी, साथियों को भी इस विषय में जानकारी देकर इनका लाभ लेने के लिए प्रेरित करें। कार्यक्रमों से लाभान्वित भाई-बहनें अपने विचार एवं सुझाव हमें निम्नलिखित पते पर अवश्य ही भेजें। विस्तृत जानकारी के लिए आप फोन या ई-मेल द्वारा भी सम्पर्क कर सकते हैं। सहयोग के लिए धन्यवाद।

टैक्निकल जानकारी –
सेटेलाइट : NSS – 6
फ्रीक्वेन्सी : 12595MHZ
सिम्बल रेट : 40700 KS
पोलेराइजेशन : वर्टिकल

: पता :

ओमशान्ति ऑडियो चैनल
द्वारा – ब्रह्माकुमारीज़ शान्तिवन, आबू रोड
फोन : 02974-228101 से 108, **एक्स.** 3320
ई-मल : omshanti.audiochannel@gmail.com
मोबाइल : 09414154376

दिल्ली, उत्तरप्रदेश तथा उत्तरांचल में की गई ईश्वरीय सेवाओं के सचित्र समाचार

1. **आगरा (कमला नगर)**- केन्द्रीय कारागार में जेलर भ्राता कैलाशचन्द्र जी को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु. विमला बहन । 2. **मिर्जापुर**- ज़िला अधिकारी भ्राता उमेश कुमार मित्तल को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु. बिन्दू बहन । 3. **बरेली**- ज़िलाधीश डॉ. भ्राता मूलचन्द यादव जी को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु. नीता बहन । 4. **वाराणसी**- आध्यात्मिक कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह के अवसर पर शिव स्मृति में खड़े हैं पुलिस अधीक्षक भ्राता राकेश प्रधान, ब्र.कु. प्रभा बहन, ब्र.कु. सुरेन्द्र बहन तथा अन्य । 5. **बलिया**- पुलिस अधीक्षक प्रकाश जी को राखी बाँधती हुई ब्र.कु. उमा बहन । 6. **बड़ौत**- बागपत ज़िला काँग्रेस उपाध्यक्ष भ्राता बाबूराम शर्मा को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु. मोहिनी बहन । 7. **हरदोई**- जेल अधीक्षक भ्राता पी.एन. पाण्डेय को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु. सीमा बहन । 8. **फ़िरोज़ाबाद**- वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक भ्राता आनन्द स्वरूप जी को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु. सरिता बहन । 9. **एटा**- ज़िलाधिकारी भ्राता अनिल कुमार सागर को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु. सोमा बहन एवं राज बहन । 10. **हल्द्वानी**- अपर पुलिस अधीक्षक भ्राता अजय जोशी तथा प्रतिष्ठित व्यापारी भ्राता हेमचन्द बलूरिया को राखी बाँधने के पश्चात् ज्ञान-चर्चा करती हुईं ब्र.कु. नीलम बहन, मनोरमा बहन तथा माया बहन । 11. **मुरादाबाद**- पुलिस ट्रेनिंग स्कूल में रक्षाबंधन पर्व पर उद्बोधन करती हुईं ब्र.कु.. अलका बहन ।

1. देहली (मजलिस पार्क)- देहली के उद्योग मंत्री भ्राता मंगतराम जी को राखी बाँधती हुई ब्र.कु. राजकुमारी बहन । **2. देहली (पश्चिम विहार)**- देहली के खाद्य-पूर्ति, बाढ़ राहत तथा पर्यावरण विकास मंत्री भ्राता राजकुमार चौहान को राखी बाँधती हुई ब्र.कु. सुषमा बहन । **3. वाराणसी (अर्दली बाज़ार)**- उ.प्र. के सहकारिता मंत्री भ्राता वीरेन्द्र सिंह को राखी बाँधती हुई ब्र.कु. वन्दना बहन। **4. आगरा (सेक्टर-7)**- उ.प्र. के राज्यमंत्री चौ. बाबूलाल जी को राखी बाँधती हुई ब्र.कु. सरिता बहन । **5. कानपुर (औरय्या)**- उ.प्र. के राज्यमंत्री भ्राता महेश त्रिवेदी जी को राखी बाँधती हुई ब्र.कु. ममता बहन । **6. इटावा (फ्रेन्डज़ कालोनी)**- सांसद रघुराज सिंह शाक्य को राखी बाँधकर आध्यात्मिक महत्त्व समझाती हुई ब्र.कु. मंगला बहन । **7. दिल्ली (लोधी रोड)**- सांसद भ्राता अजय माकन को राखी बाँधती हुई ब्र.कु. गिरिजा बहन । **8. दिल्ली (मोहम्मदपुर)**- सांसद भ्राता विजय कुमार मल्होत्रा जी को आत्म-स्मृति का तिलक देती हुई ब्र.कु. पूनम बहन । **9.देहली (पीतमपुरा)**- रक्षाबंधन के पूर्व पर भारत में श्रीलंका के हाई कमीशन के चांसलर भ्राता डब्ल्यू.ए.एम.एन. बंडारा को स्लोगन भेंट करते हुए ब्र.कु. भूषण जैन तथा ब्र.कु. मीरा बहन । **10. देवबंद (सहारनपुर)**- शिव दर्शन आध्यात्मिक प्रदर्शनी में पधारे विधान परिषद सदस्य भ्राता गजे सिंह चौधरी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. संगीता बहन । **11. सरसावा (उ.प्र.)**- राखी बाँधने के पश्चात् कर्नल एस.के. गिरि, ले. कर्नल के.एस. ढिल्लोन के साथ ब्र.कु. ज्योति बहन, रेखा तथा सुनीता समूह चित्र में । **12. कानपुर (गोविंद नगर)**- विधायक भ्राता अजय कपूर को राखी बाँधती हुई ब्र.कु. रमा बहन तथा शशि बहन।

1. देहली (पालम)- पूर्व केन्द्रीय मंत्री भ्राता राजीव प्रताप रूड़ी जी को राखी बाँधने के पश्चात् ब्र.कु. सरोज तथा प्रतिमा बहन उनके साथ । **2. हाथरस (चक्की बाजार)**- विधायक भ्राता रामवीर उपाध्याय को राखी बाँधती हुई ब्र.कु. भावना बहन । **3. हाथरस (आनन्दपुरी कालोनी)**- विधायक भ्राता मुकुल उपाध्याय को रक्षासूत्र बाँधती हुई ब्र.कु. शान्ता बहन । **4. खटीमा**- विधायक भ्राता गोपाल सिंह राणा, ब्लाक प्रमुख भ्राता आनन्द आर्य, ब्र.कु. शारदा बहन तथा अन्य रक्षाबंधन कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए । **5. दिल्ली (शान्ति भवन)**- ब्र.कु. साधना बहन, विधायक भ्राता सुरेन्द्रपाल जी को राखी बाँधती हुई । **6. नई दिल्ली (द्वारिका)**- विधायक भ्राता धर्मदेव सोलंकी जी को राखी बाँधती हुई ब्र.कु. नीलम बहन । **7. दिल्ली (राजौरी गार्डन)**- विधायक भ्राता करण सिंह तंवर तथा उनकी धर्मपत्नी को राखी बाँधती हुई ब्र.कु. शक्ति बहन । **8. आज़मगढ़**- ब्र.कु. रंजना बहन, भ्राता प्रभात कुमार, डी.आई.जी. को राखी बाँधती हुई । **9. आगरा (छीपीटोला)**- भ्राता अमरदत्त मिश्र, डी.आई.जी. पुलिस को राखी बाँधती हुई ब्र.कु. अश्विना बहन । **10. इटावा (ईदगाह)**- भ्राता डॉ. मंसाराम वर्मा जी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. मंजू बहन । **11. सहारनपुर**- आध्यात्मिक जीवन द्वारा मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना अभियान का शुभारम्भ करते हुए सिटी मजिस्ट्रेट भ्राता अनिल कुमार सिंह जी, विधान परिषद सदस्य भ्राता हेमसिंह पुण्डिर, भ्राता जगदीश राणा, केबिनेट मंत्री लघु उद्योग, उ.प्र., दादी भगवती जी तथा अन्य । **12. दिल्ली (शालीमार बाग)**- ब्र.कु. कृष्णा तथा ब्र.कु. पूनम बहन, स्वामी शिवेन्द्र नागर को राखी बाँधती हुई ।

1. शामली- एस.पी. भ्राता जी.एन. गोस्वामी जी को राखी बाँधती हुई ब्र.कु. राज बहन । 2. देहली (गरिमा गार्डन)- बार एसोसिएशन के अध्यक्ष भ्राता एस.आर. राघव तथा उनके साथियों को राखी बाँधने के पश्चात् ब्र.कु. उर्मिला, हेमा, अनिता बहन समूह चित्र में । 3. फतेहपुर (8 महादेवन टोला)- ज़िला अध्यक्ष शिवसेना भ्राता युवा रामराज गाँधी को आत्म-स्मृति का तिलक लगाती हुई ब्र.कु. मुन्नी बहन । 4. मेरठ (लाला का बाज़ार)- ज्ञान-चर्चा के पश्चात् ब्र.कु. मंजू, ऊषा बहन तथा सुखबीर भाई फसल प्रणाली अनुसंधान निदेशालय के निदेशक भ्राता एस.के. शर्मा तथा अन्य वैज्ञानिकों के साथ समूह चित्र में । 5. आगरा (शिव संदेश भवन)- उ.प्र. के लोकदल अध्यक्षा बहन कुसुम चाहार जी को राखी बाँधती हुई ब्र.कु. मधु बहन । 6. फर्रुखाबाद (आढ़तियान)- भ्राता राघवेन्द्र सिंह जी, श्रमजीवी पत्रकार यूनियन के ज़िला अध्यक्ष तथा स्वतंत्र भारत के ब्यूरो चीफ़ को राखी बाँधती हुई ब्र.कु. मंजू बहन । 7. फतेहगढ़- रूपापुर शूगर फैक्ट्री के मुख्य महाप्रबन्धक भ्राता एम.सी. जोशी को राखी बाँधती हुई ब्र.कु. सुमन बहन । 8. वढ़पुर- वरिष्ठ समाजसेवी भ्राता विशन स्वरूप अग्रवाल को राखी बाँधती हुई ब्र.कु. शर्णिमा बहन । 9. ऋषिकेश- युवा मोर्चा प्रदेश मंत्री भ्राता संदीप गुप्ता जी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. आरती बहन । 10. दिल्ली (सुखदेव विहार)- श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की झाँकी के उद्घाटन के पश्चात् भ्राता विपिन कपूर तथा चिकित्सकों के साथ ब्र.कु. प्रभा, स्नेहल बहन तथा अन्य। 11. बड़ौत- जन्माष्टमी की झाँकी का उद्घाटन करते हुए राधाकृष्ण कमेटी के अध्यक्ष भ्राता मदनमोहन गुप्ता जी तथा अन्य ।

1. नई दिल्ली (महरोली)- दिल्ली के महापौर चौ. सतवीर सिंह को आत्मिक स्मृति का तिलक देती हुईं ब्र.कु. अनीता बहन । साथ में ब्र.कु. संध्या बहन । **2. भदोही**- भ्राता सुरेश प्रसाद बरनवाल, प्रसिद्ध उद्योगपति, ब्र.कु. प्रभा बहन तथा ब्र.कु. सुरेन्द्र बहन का स्वागत करते हुए । **3. दिल्ली (ईस्ट पटेल नगर)**- दिल्ली मिल्क स्कीम के महाप्रबन्धक भ्राता नज़ीर अहमद शेख को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु. प्रकाश बहन । **4. दिल्ली (मण्डावली-खोड़ा कालोनी)**- ब्र.कु. बहनों से राखी बंधवाते हुए भ्राता एम.एल. गौतम, पुलिस सब-इंसपेक्टर एवं बहन रीना गौतम । **5. दिल्ली (छज्जूपुर)**- एस.एच.ओ. भ्राता वीर सिंह त्यागी को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु. लक्ष्मी बहन । **6. दिल्ली (स्वास्थ्य विहार)**- भ्राता रमेश पण्डित, नगर निगम पार्षद को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु.उर्मिला बहन । **7. दिल्ली (दिलशाद कालोनी)**- जी.टी.बी. हॉस्पिटल के मेडिकल अधीक्षक भ्राता डी.के.श्रीवास्तव को राखी बाँधने के पश्चात् ज्ञान-चर्चा करती हुईं ब्र.कु. इन्द्रा बहन । **8. फर्रुखाबाद (नेहरु रोड)**- सी.टी.स्कैन सेन्टर के प्रबन्धक निदेशक डॉ. भ्राता ओमप्रकाश गुप्ता को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु. लता बहन । साथ में अन्य डॉक्टर्स । **9. मुज़फ्फरनगर (अंसारी रोड)**- स्वामी ओमानन्द ब्रह्मचारी जी को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु. पूनम बहन । **10. देहली (कराला)**- इण्टरनेशनल कलिंगा केबल के प्रबन्ध निदेशक भ्राता भारतभूषण को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु. राजश्री बहन । **11. देहली (हरिनगर)**- ब्र.कु. भाग्य बहन भ्राता पी.के. केड़िया, निदेशक, इन्कमटैक्स को राखी बाँधती हुईं । ब्र.कु. सुन्दरलाल जी साथ में हैं । **12. दिल्ली (मंगोलपुरी)**- भ्राता पी.वी. रामचन्द्रन, डिप्टी जनरल मैनेजर नेशनल बैंक फार एग्रीकल्चर एण्ड रूरल डेवलपमैण्ट नाबार्ड को राखी बाँधने के पश्चात् ब्र.कु. सरस्वती बहन, रेनू बहन तथा जगदीश भाई ग्रुप फोटो में ।

1. अमरोहा(जे.पी. नगर)- ज़िला पंचायत अधिकारी को आत्म-स्मृति का तिलक देती हुईं ब्र.कु. मनीषा बहन । **2. रूरा (उ.प्र.)**- भ्राता श्रीराम स्वरूप सिंह गौर, अध्यक्ष गन्ना शोध संस्थान, उ.प्र. को आत्म-स्मृति का तिलक देती हुईं ब्र.कु. प्रेम बहन । **3. बलिया**- ज़िलापूर्ति अधिकारी भ्राता श्रीकुमार निर्मलेन्दु जी को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु. सुमन बहन तथा चन्दा बहन । **4. शिकोहाबाद**- भ्राता रामबाबू वर्मा, सहायक प्रबन्धक परिवहन निगम को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु. बीना बहन । **5. मुगलसराय**- मण्डल रेल प्रबन्धक भ्राता आर. विजय मोहन जी को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु. सरोज बहन । **6. सरधना (मेरठ)**- न्यायिक तहसीलदार भ्राता मनोज कुमार सिंह को आत्म-स्मृति का तिलक देती हुईं ब्र.कु. विमला बहन । साथ में ब्र.कु.रतन भाई । **7. काशीपुर**- उपज़िलाधीश भ्राता प्रताप शाह व अध्यक्ष बार कौंसिल भ्राता धर्मवीर शर्मा को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. चन्द्रावनी बहन । **8. नई दिल्ली (महिपालपुर)**- ब्र.कु. अनुसूइया बहन, राजेन्द्री सहरावत, सदस्या नगर निगम को प्रसाद देती हुईं । **9. मवाना (मेरठ)**- शुगर मिल के महाप्रबन्धक भ्राता करन सिंह व अधिकारीगण के साथ ज्ञान-चर्चा करती हुईं ब्र.कु. अमिता बहन । **10. सीतापुर**- जेल अधीक्षक को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु. सुमित्रा बहन । **11. नई दिल्ली (उत्तम नगर)**- तिहाड़ जेल में कैदियों को आत्म-स्मृति का तिलक देती हुईं ब्र.कु. लीला बहन, राखी बाँधती हुईं ब्र.कु. हेमा बहन ।

1. देहली (गाज़ीपुर)- कला निकेतन पब्लिक स्कूल में राखी बाँधने के पश्चात् ग्रुप फोटो में खड़ी हुई हैं ब्र.कु. सुधा बहन, प्रिंसीपल बहन संजय चौहान तथा अन्य शिक्षकगण । **2. कानपुर (सिविल लाइंस)**- आध्यात्मिक जीवन द्वारा मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए पुलिस महानिरीक्षक भ्राता रिजवान अहमद जी, ब्र.कु. नलिनी बहन, ब्र.कु. शकू बहन, ब्र.कु. विद्या बहन, ब्र.कु. निकुंज भाई तथा डॉ. के.बी. अग्रवाल जी । **3. दिल्ली (मीत नगर)**- भ्राता राजेश अरोरा, प्रसिद्ध उद्योगपति को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. पुष्पा बहन । **4. इटावा (नेविल रोड)**- भ्राता सर्वेश चौहान, संयोजक युवा एकता मिशन को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. ज्योत्सना बहन । **5. बावल (ओ.आर.सी.)**- श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर झाँकी का उद्घाटन करने के पश्चात् नगरपालिका अध्यक्षा बहन विजया देवी कौशिक एवं भ्राता कौशिक को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. लक्ष्मी एवं कमलेश बहन । **6. होडल**- श्रीकृष्ण जन्माष्टमी कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए मार्केट प्रधान गुरुदयाल जी, वेद प्रकाश सिंगला जी तथा ब्र.कु. ऊषा बहन । **7. दिल्ली (लॉरेन्स रोड)**- विधायक भ्राता अनिल भारद्वाज जी को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. लक्ष्मी बहन । **8. दिल्ली (बिहारी कालोनी)**- राखी बाँधने के पश्चात् डॉ. नरेन्द्रनाथ, अध्यक्ष यमुना पार विकास बोर्ड को ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. प्रीति बहन, ब्र.कु. अन्नू बहन तथा अन्य । **9. दिल्ली (लक्ष्मी नगर)**- लवली पब्लिक स्कूल के चेयरमैन भ्राता आर.पी. मलिक तथा बहन मलिक को राखी के पश्चात् ईश्वरीय सौगात देती हुईं ब्र.कु. पुष्पा बहन । **10. दिल्ली (कालका जी)**- एस.एच.ओ. (न्यू फ्रैंड्स कालोनी) को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु. सुजाता बहन । **11. फ़र्रुखाबाद (ओमनिवास)**- रूपापुर शुगर मिल के महाप्रबन्धक भ्राता एम.सी. जोशी को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु. शोभा बहन ।

जब मैं झूठे ब्राह्मण से सच्चा ब्राह्मण बना

–ब्रह्माकुमार ओमप्रकाश, पठानकोट

मेरा जन्म मध्यम वर्ग के एक ब्राह्मण परिवार में सन् 1962 में हुआ। मेरे माता-पिता भगवान के प्रति अगाध श्रद्धा रखने वाले धर्मप्रेमी हैं। मैं भी बाल्यकाल से ही उनकी धार्मिक आस्था से प्रभावित था और हनुमान चालीसा, सभी देवियों की आरतियां, गायत्री मंत्र इत्यादि मुझे कंठस्थ थे। मैं नित्य हारमोनियम के साथ संगीतमय लय से इनका गायन किया करता था। श्री रामचन्द्र जी मेरे इष्ट थे। रामलीला में मैंने चौदह वर्षों तक श्री रामचन्द्र जी का चरित्र अभिनीत किया। नवरात्रों में पूर्ण उपवास रखना, रामलीला के दौरान राम वनवास का पार्ट बजाते हुए घर न आना, भूमि पर संन्यासी के समान सोना मुझे अति प्रिय था। रामलीला के अंतिम दिन जब रामचन्द्र जी के रूप में मुझे राजतिलक होता था तो बहुत सुखद अनुभव होता था। लेकिन जब राजाई पोशाक उतारनी पड़ती थी तो बहुत पीड़ा होती थी। मैं रोते-रोते सोचता था – काश! मेरा वास्तविक स्वरूप यही होता। लेकिन कहा जाता है कि नर चाहत कुछ और, भई और की और। अतिशीघ्र ही मेरी सरकारी नौकरी लग गई और मेरा कुसंग ऐसे दरिन्दे लोगों से हुआ कि मैं शराब पीना, मांस खाना सीख गया। शराब और शबाब (वासना) के सिवाए दिनचर्या में कुछ रहा ही नहीं। इसी दौरान मेरी शादी हो गई। मैंने घर का माहौल इतना खराब कर दिया था कि शादी पर माँस तथा शराब का दरिया बहा दिया। इसे मैं सामाजिक मान-इज़्ज़त समझता था। मेरे आस-पास के लोग आपस में दबी जुबान से फुसफुसाते थे कि अगर ब्राह्मणों का यह हाल है तो शेष समाज का क्या हाल होगा?

तलाक की नौबत – शादी के कुछ दिन बीतने पर मेरे चरित्र की सच्चाई की भनक पत्नी के कानों तक पहुँचने लगी और हमारे बीच हल्का मन-मुटाव रहने लगा। दोस्तों को घर में बुला कर देर रात तक माँस-मदिरा की महफ़िल जमाए रखना या दोस्तों के घरों में जाकर ऐसी महफ़िलों में शामिल होना मेरा आम धंधा बन गया था। पत्नी के मना करने पर उसकी पिटाई इस कदर होती कि उसकी चिल्लाने की आवाज़ें प्रतिदिन आस-पड़ोस के लोग सुनने लगे। परिणाम-स्वरूप पत्नी घर छोड़कर मायके चली गई। चार-पाँच मास के बाद हमारी बेटी ने उसके मायके में ही जन्म लिया। मैं यह कहकर कि ''अच्छा व्यवहार करूँगा'' उसे अपने घर ले आया। परंतु मेरी बिगड़ी आदतों का वही सिलसिला जारी रहा। कुछ दिनों में दूसरा बच्चा भी आ गया, पत्नी की भी सरकारी नौकरी थी, पर सुख-चैन एक पल भी हमें नसीब नहीं था। घोर अशान्ति से पीड़ित पत्नी ने एक दिन सल्फास खाकर आत्महत्या की कोशिश भी की। आखिर तंग आकर हम दोनों ने तलाक लेने का फैसला कर लिया परंतु बीच में दोनों बच्चे आ गये। मैंने वकील से राय ली। उसने कहा कि यह तो आपकी पत्नी की मर्ज़ी के ऊपर है। वह बच्चे ले ले तो तलाक जल्दी मिल सकता है। मैं पत्नी के मायके की पंचायत में भी गया कि कैसे भी करके मेरा इससे छुटकारा हो जाए ताकि मेरा शराब-शबाब का धंधा निरंतर चलता रहे। मैं बेहद परेशान और हताश था, कोई मुझे पत्नी से छुटकारा दिलाए, ऐसे मसीहे को तलाश रहा था।

ब्रह्माकुमारियों के प्रति ग़लतफहमी – अचानक एक दिन पठानकोट से मेरी चचेरी बहन ज्योति (जो इस समय पानीपत में समर्पित ब्रह्माकुमारी है) का एक पत्र मुझे मिला कि मैं

ब्रह्माकुमारी आश्रम में आई हूँ, आप मुझे मिलने आइये। पत्र पढ़ते ही मेरे अंदर गुस्से का ज्वार आ गया कि यह लड़की कहाँ ब्रह्माकुमारियों के चक्कर में आ गई है। मैं कल ही इसे आश्रम से निकाल कर घर छोड़ कर आऊँगा। क्योंकि मैं बाल्यकाल से ही ब्रह्माकुमारियों के प्रति गलत भावना रखता था। मैंने सुना था कि जो एक बार इनकी तरफ देखता है उसे ये ऐसा अपने पीछे लगाती हैं कि इंसान न घर का रहता है न घाट का। मेरी माता भी ऐसा ही कहती थी। ज्योति को ब्रह्माकुमारियों के चंगुल से छुड़ाने का लक्ष्य लेकर मैं पठानकोट ब्रह्माकुमारी आश्रम पर पहुँच गया। आश्रम पर एक भाई साहब (ब्रह्माकुमार प्रताप जी) ने प्यार से कहा, ''अंदर आइए।'' मैंने गुस्से से कहा – ''मुझे आपसे नहीं, ज्योति से मिलना है।'' ''ज्योति अन्दर है'', उन्होंने कहा। मैं अंदर जाकर आध्यात्मिक संग्रहालय में बैठ गया। इतने में वही भाई आए और बोले, ''आप ईश्वरीय ज्ञान सुनिए, शान्ति मिलेगी, शक्ति मिलेगी।'' मैंने झल्लाकर कहा – ''मुझे ज्योति से मिलना है।'' इतने में ही ज्योति आ गई। उसने भी मुझे ईश्वरीय ज्ञान की बातें सुनाई परन्तु मेरे लिए तो काला अक्षर भैंस बराबर ही था। मैं सुनने को तैयार ही नहीं था। मन में सोचा कि कल आऊंगा, आज इस भाई ने मेरा काम नहीं बनने दिया। दूसरे दिन मैं फिर आश्रम पहुँचा, पता चला कि ज्योति घर चली गई है। मुझे अंदर ही अंदर बहुत खुशी हुई। मैं जैसे ही वापिस जाने लगा तो एक सफेद वस्त्रधारी ब्रह्माकुमारी बहन, चाय-पानी और प्रसाद लेकर आई और मुझे बैठने के लिए कहने लगी। मैं बैठ गया। चाय तो पी ली लेकिन प्रसाद नहीं लिया। मुझे मेरा पता तथा फोन नम्बर लिखवाने के लिए कहा गया। मैंने यह सोचकर गलत लिखवा दिया कि कहीं ये लोग मेरे पीछे न पड़ जाएं। पुन: आने का वायदा करके मैं घर लौट गया।

मुझे रहस्यमयी पर सत्य जानकारी मिली – घर आकर मैंने विचार किया कि मुफ़्त में चाय पीने व ज्ञान सुनने में क्या हर्ज है और फिर वहां सुंदर लड़कियां भी हैं (पाठकगण समझ सकते हैं कि सांसारिक, विकारी, पतित दृष्टि वाला व्यक्ति त्याग, तप की मूर्ति बनी बहनों को भी किस नज़र से देखता है।) मैं दूसरी सुबह फिर जा पहुँचा। भाई साहब ने ''आप कौन हैं?'' इस विषय पर विस्तृत जानकारी दी, जो मुझे रहस्यमयी पर सत्य लगी। तीसरे दिन मुझे योग का पाठ पढ़ाया गया, वह भी अद्भुत वृत्तांत लगा। विद्यालय में वापिस आकर मैं अपने कक्ष में बैठ गया। अचानक किसी ने आवाज दी – ''बच्चे! बच्चे!'' मेरा ध्यान दीवार पर टिक गया पर दिखाई कुछ नहीं दिया। फिर आवाज आई – ''बच्चे! बहुत देर के बाद बाप के पास आए हो, मैंने तुम्हें किसलिए भेजा और तुम क्या करते रहे?'' मुझे ऐसा लगा जैसे कि मुझ चोर की चोरी जग ज़ाहिर हो गई है और मैं पकड़ा गया हूँ। मैंने रोना शुरू कर दिया। मेरे अंदर से प्रतिक्रिया हुई – ''माफ करो! माफ करो! आगे से ऐसा नहीं करूँगा।'' बीस मिनट तक यह सब चलता रहा। मेरे कितने आँसू बहे, पता नहीं। फिर जल्दी से उठ कर मैंने मुंह धो लिया ताकि मुझे रोता देखकर कोई यह न समझे कि इसका पत्नी से फिर कोई नया झगड़ा हो गया होगा।

अगले दिन आश्रम पर पहुँचकर मैंने भाई साहब को सब सुनाया। उन्होंने मुझे अकेले ही योग-कक्ष में बिठा कर, स्वयं सन्दली पर बैठ कर, मेरी आँखों में देखते हुए कहा – '''तुम शरीर नहीं हो, विशुद्ध आत्मा हो। शांत स्वरूप हो...।'' मैं जैसे **गुम हो गया। बहुत दूर आकाश में, बहुत ऊँची दुनिया में जहाँ बेहद सुख, बेहद आनंद था वहाँ पहुँच गया। करीब चालीस मिनट तक यह सब चला। सामने देखा तो भाई साहब के स्थान पर सफेद-सफेद मूँछों वाला वृद्ध पुरुष (ब्रह्मा बाबा) दिखाई**

दिया। यह तो बाद में पता चला कि वह परमपिता परमात्मा शिव के साकार माध्यम प्यारे ब्रह्मा बाबा की आकृति थी।

नया जन्म मिला – अब पहला ओम प्रकाश मर गया और नए व्यक्तित्व का जन्म हो गया। नजरें स्थिर हो गई, होंठ सिल गए, जिस्म शांत हो गया, कदम धरती से ऊपर उठ गए। आश्रम वाले हैरान हो गए कि इसको क्या हो गया, इसकी आवाज़ कहाँ गई। उनसे आज्ञा लेकर मैं घर पहुँचा। रात हो चुकी थी इसलिए सीधा अपने कमरे में पहुँचा। घर वालों को थोड़ा खटका हुआ कि यह शोर मचाने वाला आज अंदर चुपके से कैसे बैठ गया। बहन जी के द्वारा दिए गए शिव बाबा के प्रकाश-चिन्ह पर मैं योग करने लगा। अंदर एक अनहद नाद (स्वर) बज रहा था "यही है, यही है...।" उसी समय लौकिक माता जी, सबसे छोटी बहन गीता (पठानकोट सेवाकेंद्र पर समर्पित ब्रह्माकुमारी) तथा लौकिक चाची जी कमरे में आए। मुझे योग करता देख वे भी सामने बैठ गए। उन्हें देखते हुए (दृष्टि देते हुए) मैं बोला – "मैं आत्मा हूँ, शरीर वस्त्र है ...।" माता जी हंसने लगी। योग पूरा हुआ तो माता जी ने बताया कि मैंने आपकी छाती पर एक सफेद वस्त्रधारी बूढ़े व्यक्ति की तस्वीर देखी। गीता बहन को भी ज्योति का साक्षात्कार हुआ। छोटा भाई कहने लगा कि भाई साहब, अब यह कौन-सा ड्रामा रच रहे हो? बाबे बन गए हो क्या? मैं शांत रहा। एक दिन मैंने अपने भाई को आदरणीया बड़ी दादी जी के प्रवचन की कैसेट रिकार्डिंग करने के लिए दी। उसने वह सुन ली। वह इतना प्रभावित हुआ कि ज्ञान में तीव्र गति से चल पड़ा। लौकिक बड़ी शादीशुदा बहन अमृतसर से मुझे मिलने आई। थोड़ा ही ज्ञान सुना और उसे भी नशा चढ़ गया। अब उनके घर में भी गीता पाठशाला है। दूसरे नम्बर की बहन को मैंने घर में ही योग कराया। बलिहारी बाबा की, जो वह जहाँ देखे उसे दिव्य प्रकाश ही नज़र आए। परिवार सहित वह भी ज्ञान में चल पड़ी। उसके घर में भी गीता पाठशाला है। तीसरी भी युगल सहित निश्चयबुद्धि बन गई है।

परीक्षाएँ – ज्ञान में आने के बाद जब दोस्तों को पता चला कि जिसके नाम हर शाम होती थी वह हमें छोड़ने लगा है तो उन्होंने बहुत प्रयत्न किए मुझे पुराने रास्ते पर चलाने के परंतु मेरा भोजन तो एक दम सात्त्विक हो चुका था। आखिर उन्होंने मेरी दृढ़ता को देखते हुए यह कहकर मुझे छोड़ दिया कि यह तो पूर्णत: बदल चुका है। भोजन की शुद्धि को लेकर भी ज़ोरदार परीक्षा आई पर विघ्न-विनाशक प्रभु ने सब विघ्नों को हर लिया। ईश्वरीय ज्ञान सुनने के बाद जब मुझे मालूम पड़ा कि मांस-मदिरा जैसी तामसिक वस्तुएँ ग्रहण करने से मानव का मन मैला हो जाता है तो मैंने निश्चय किया कि मांस-मदिरा के साथ-साथ परिवार के भोजन में से लहसुन-प्याज को भी विदाई दे दी जाए। मैंने यह तो सुन रखा था कि ब्राह्मण होने के नाते हमारे परिवार के पूर्वज ऐसी वस्तुओं को खाना तो दूर, छूना भी पाप समझते थे। मेरे इस फैसले को सुनते ही पिताजी आग-बबूला हो गए, बोले – "भगवान द्वारा पैदा की हुई वस्तुओं को तू मना करने वाला कौन होता है? अगर ऐसा करना है तो तेरे लिए घर में जगह नहीं है।" मैं शांत रहा परंतु पूर्ण अडिग भी रहा। मैंने अपना संकल्प माताजी को सुनाया। उन्होंने पिताजी को समझाया परंतु वे नहीं माने। बोले – "मेरा खाना अलग कर दो।" फिर एक दिन मैंने पिताजी के पास प्रेमपूर्वक बैठते हुए विनम्र निवेदन किया कि एक तो मैं घर का बड़ा बेटा हूँ; दूसरा, अगर प्याज-लहसुन शुद्ध होते हैं तो इन्हें देवताओं के मंदिरों में क्यों नहीं चढ़ाया जाता? भंडारों में इनका प्रयोग क्यों नहीं किया जाता? श्राद्ध-पित्रों के भोजनार्थ भी इनका प्रयोग निषेध है। यह बात उन्हें जंच गई तथा लहसुन-प्याज छोड़ने की स्वीकृति दे दी। अब माँस-मदिरा भक्षण करने

वाले, अश्लील गीतों की धुनों पर नाचने वाले परिवार में प्रभु-स्मृति में ब्रह्मा भोजन बनते हुए दस वर्ष हो गए हैं जिसे देखकर आस-पड़ोस के लोग भी हैरान होते हैं।

सबसे बड़ी परीक्षा मेरी युगल की तरफ से आई। जब उसे पता चला कि मैं ब्रह्माकुमार बन गया हूँ तो लोगों ने उसे बहुत उकसाया, भड़काया। उसने मेरे पूर्व जीवन को मद्देनज़र रखते हुए यही सोचा कि यह अब ब्रह्माकुमारियों के पीछे चला गया है और घर छोड़ देगा तथा यह भी इसने कोई नया नाटक रचा है। वह मुझे छोड़कर फिर मायके चली गई। लेकिन समय के साथ-साथ मेरे जीवन में आए सच्चे बदलाव को देखकर वह ज्ञान की तरफ आकर्षित हो गई और पुरुषार्थ में मुझसे भी आगे निकल कर अथक सेवाधारी बन गई है। मेरी बेटी दिव्य कन्या छात्रावास (इंदौर) में पढ़ी है। बेटा-बेटी दोनों कई बार शान्तिवन में बच्चों के कार्यक्रम में शामिल हो चुके हैं।

अन्तिम परीक्षा – मेरी सबसे छोटी बहन गीता भी ईश्वरीय ज्ञान में निश्चयबुद्धि हो गई। गृहस्थियों के दु:ख भरे जीवन को देखकर उसमें वैराग्यवृत्ति आ गई। वह पिताजी को कहने लगी कि मैं दासी नहीं, देवी बनूंगी। मैं किसी के पाँव पड़ने वाली नहीं बनूँगी। आखिर फैसले का दिन आ गया। उसे पिताजी से स्वीकृति का पत्र लेना था। पिताजी मुझ पर बरस पड़े कि तूने अपना घर तो बरबाद किया ही है, अब मेरी बेटी को क्यों बरबाद करता है? उन दिनों मेरी युगल की तरफ से मेरी परीक्षाएँ चरम सीमा पर थीं। पिताजी ने कहा – ''मैं पंचायत बुलाऊंगा; तुझे भी घर से निकाल दूँगा।'' गीता बहन ने शेरनी की तरह निर्भयता से कहा – ''लाइए पंचायत, मैं उनको भी ज्ञान सुनाऊंगी।'' आखिर सत्य की जीत हुई। पिताजी झुक गए, बदल गए। सन् 2001 में पंजाब की 21 कुमारियों के समर्पण समारोह में गीता बहन भी एक सौभाग्यशाली शिव सजनी थी। पिताजी ने गाँव में, अपने ही घर पर समर्पण का एक भव्य कार्यक्रम आयोजित किया जिसमें पंजाब के उच्च शिक्षा मंत्री, सब डिविजनल मजिस्ट्रेट, तहसीलदार तथा गणमान्य व्यक्तियों ने गीता बहन के समर्पण समारोह की तथा ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विद्यालय की भूरि-भूरि प्रशंसा की। अपना अनुभव लिखने का मेरा यही ध्येय है कि परमात्म-शक्ति ने ही मुझ जैसे हैवान को श्रेष्ठ इंसान, असुर कुमार को श्रेष्ठ आदर्श ब्रह्माकुमार तथा जाति के ब्राह्मण को श्रेष्ठ कर्म करने वाला सच्चा ब्राह्मण बना दिया। युगल को पवित्र देवी जैसी ब्रह्माकुमारी बनाया है। परिवार के करीब 38 सदस्य बाबा का हाथ और साथ पकड़े हुए हैं। घर की भव्य इमारत में गीता पाठशाला चलती है जिसे मैं और मेरी युगल चलाते हैं तथा हर साल मीठे बापदादा की यज्ञ-सेवा करते हुए मधुबन में उनसे मंगल मिलन मनाते हैं।

भिलाई नगर- स्वच्छ, स्वर्णिम ग्राम्य भारत परियोजना के अन्तर्गत पाटन ब्लाक के 37 ग्राम सरपंचों के लिए आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् सरपंच संघ के अध्यक्ष भ्राता बाबूलाल चंडाकर जी, ब्र.कु. गीता बहन से राखी बंधवा कर प्रसाद ग्रहण करते हुए।

गृह लक्ष्मी कौन ?

–ब्रह्माकुमारी सुशील, अलवाल (सिकंदराबाद)

लक्ष्मी शब्द सुनते ही धन की देवी का स्मरण हो आता है। अधिकतर लोगों की यह धारणा बन गई है कि जिसके साथ नजदीक का संबंध जुड़ने पर धन की बढ़ोतरी हो जाए वही नारी लक्ष्मी है। घर में कन्या-जन्म होने पर यदि पिता-भाई की कमाई बढ़ जाए तो कहा जाता है कि घर में लक्ष्मी आई है। पुत्र-वधू यदि बेशुमार धन दहेज में ले आए या उसके आने पर घर में कमाई बढ़ जाए या वह बड़ा वेतन पाने वाली हो तो उसे भी लक्ष्मी कहा जाता है। तिजोरी में जिस किसी प्रकार से भी धन बढ़ने लगे तो कहते हैं कि लक्ष्मी की कृपा दृष्टि हुई है।

दीवाली के दिन लक्ष्मी देवी का आह्वान करने से पहले पूरे घर की एक-एक वस्तु की सफाई की जाती है कि कहीं अस्वच्छता देखकर लक्ष्मी नाराज़ न हो जाए। धन खर्च करके भी सजावट की जाती है। रात को दीपक जलाकर रोशनी करते हैं। कई तो रात को द्वार भी बंद नहीं करते कि कहीं लक्ष्मी रूठकर न चली जाए। सांयकाल को ''तस्वीर में बैठी हुई'' लक्ष्मी को सामने रखकर उसकी अनेक शुद्ध पदार्थों से पूजा करते हैं, आरती उतारते हैं। खड़ी लक्ष्मी वाली मूर्ति की पूजा करना दोष मानते हैं, इसलिए कि कहीं वो भाग न जाए। बैठी का यह अर्थ भी लगाते हैं कि घर में जो भी धन आएगा वह स्थिर रहेगा, उसमें बढ़ोतरी होती रहेगा। धन प्राप्ति हेतु इस दिन व्यर्थ व अनावश्यक वस्तुओं पर बहुत धन खर्च करते हैं।

कई व्यक्तियों की पीढ़ियों तक धनाढ्यता चलती रहती है। कई धन के लालची गरीबों की लाचारी का फायदा उठाते हैं, उनका धन या संपत्ति अपने पास गिरवी रखकर मनचाहा ब्याज लगाकर उन्हें लूटते रहते हैं। पीढ़ियों तक उनकी संतानों का शोषण करते रहते हैं और स्वयं को भाग्यशाली समझते हैं। वे धन की तिजोरी पर लक्ष्मी का चित्र लगाए ''शुभ-लाभ'' लिखकर बैठे रहते हैं। तामसिक प्रकृति वालों की तो पूजा ही धन के उद्देश्य से होती है। लक्ष्मी को अनेक नाम देते हैं। धन-लक्ष्मी तो प्रचलित नाम है ही इसके साथ-साथ विजय-लक्ष्मी, वर-लक्ष्मी, शुभम्-लक्ष्मी आदि-आदि नामों से भी पुकारते हैं।

कुरीतियों, कुविचारों को मिटाने वाली ही गृहलक्ष्मी – बचपन में, एक पिछड़े गाँव की नवविवाहित समझदार बहू की कहानी सुनी थी। उस गांव के लोगों को पता नहीं था कि रात होते ही अंधेरा क्यों फैल जाता है। उनके ख्याल में था कि केवल उनके गाँव में ही रोज़ अंधेरा होता है इसलिए रात होने पर, गाँव के सभी बच्चे, बूढ़े, जवान, स्त्री-पुरुष अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार बड़ी-बड़ी बोरियों, बर्तनों व झोलियों में अंधेरा भर-भरकर गाँव के बाहर जाकर फेंक आते। जब सुबह की रोशनी दिखाई देती तो समझते कि हमने सारा अंधेरा उठाकर बाहर फेंक दिया। एक बार उस गाँव में एक पढ़ी-लिखी बहू शादी होकर आई। शाम होते ही सब लोग अंधेरा ढोने के काम में लगने की बात करने लगे। नवविवाहिता को बड़ा आश्चर्य हुआ, उनकी अज्ञानता पर अफसोस हुआ तथा उन पर बड़ा तरस आया। अगले दिन शाम होने से पहले ही उस वधू ने गाँव के सभी लोगों को कह दिया कि आज मैं अकेली ही सारे गाँव का अंधेरा ढो दूंगी। आप निश्चिंत होकर सो जाएँ। इसके बाद उसने हरेक घर में सरसों के तेल का दीया जला कर रखवा दिया। प्रात: जब प्रकाश फैलने लगा तो उसने सबको जगा कर बताया कि देखो, अंधेरा खत्म हो गया है और प्रकृति का यह राज़ सबको समझाया कि अंधेरा और प्रकाश स्वत: ही होता रहता है। यह सुन सब बहुत प्रसन्न हुए। इस प्रकार उसने

गांव वालों को मेहनत से, अज्ञानता से मुक्त कर दिया। ऐसी ही समझदार नारी सच्ची गृहलक्ष्मी कहलाने की अधिकारी है जो संसार में प्रचलित कुरीतियों, रूढ़ियों, कुविचारों, विकारों और बुरे संस्कारों को खत्म करने में अग्रणी भूमिका निभाए।

सुघड़ गृहिणी – **विद्यार्थी जीवन में जो गणित की विद्या दी जाती है वह केवल अंक प्राप्ति के उद्‌देश्य से नहीं होती, वह जीवन-क्षेत्र में कुशलतापूर्वक, बिना धोखा खाए व बिना धोखा दिये, कमाने व खर्च करने के लिए दी जाती है।** अगर किसी ने गणित के अंक तो शत-प्रतिशत पा लिये परंतु व्यवहारिक जीवन में धन का सदुपयोग करना नहीं आया तो ऐसे गणितज्ञ का क्या लाभ? कुछ ही समय पहले ऐसा नियम था कि पुरुष धन कमाते थे और नारी उस धन से गृहस्थी का व्यय चलाती थी। घर-घर में नियमी, संयमी और सुघड़ गृहिणियाँ होती थीं। **सुघड़ गृहिणी अर्थात् जो थोड़े धन में भी सबको संतुष्टता का अनुभव करा सके, कमाई का ठीक रूप से सदुपयोग कर सके, आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए मितव्ययी बनकर रहे; परिवार में सुख, शान्ति, प्रेम व आनन्द की लहर फैलाए रखे; जो आपसी व्यवहार में मीठे व ज्ञानयुक्त बोल से सबको संतुष्ट रखे; मित्र-संबंधी व परिवार वालों के साथ निष्पक्ष भाव से सच्ची आत्मीयता रखे तथा परिवार के युवा, वृद्ध सबका उचित मार्ग-दर्शन करे।** हम सभी जानते हैं कि आज के तमोप्रधान समय में ज्यादा धन मनुष्य की आदतों को खराब करता है, लापरवाही सिखाता है, व्यर्थ का खर्च करवाता है, कभी-कभी बुरे-बुरे कारनामे भी करवा देता है, अभिमानी बना देता है, गरीबों को शर्मिन्दा करवाता है या फिर अधिक धन की प्राप्ति की इच्छा, अपने सामने वालों में भी पैदा करवाता है। कभी-कभी साथी-संबंधी जो समान धनवान नहीं होते, उसके ऐसे कार्यों से दु:खी भी हो पड़ते हैं और गलत ढंग से धन प्राप्त करने चल पड़ते हैं। अत: सुघड़ गृहिणी परिवार के सदस्यों में एकता का गुण भरती है। धन के विभिन्न पहलुओं, गुण-दोषों को ध्यान में रखकर हरेक को संयमी और शीलवान बनाती है।

सच्ची अन्नपूर्णा – इस समय संगमयुग चल रहा है। ब्रह्मा बाबा हमारे लिए बड़ी माँ की भूमिका निभा कर हमें समय, श्वास, संकल्प, स्थूल धन आदि की बचत करना सिखा रहे हैं। सारे विश्व की आत्माओं को ''कम खर्च बालानशीन'' अर्थात् कम खर्च से अधिक प्राप्ति करना सिखा रहे हैं। ऐसे संस्कारों वाले ही प्रभु के प्रिय बनते हैं। साथ-साथ ब्रह्मा बाबा हमें उदार दिल व विशालहृदय बनना सिखा रहे हैं। जैसे एक माँ अपनी बेटी को श्रेष्ठ व्यवहार से नाम कमाने की शिक्षा देती है वैसे ही ब्रह्मा माँ भी हम ब्राह्मण बच्चों को सच्ची गृहलक्ष्मी बनना सिखा रहे हैं। प्यारे बाबा कहते – ''बच्चो, तुम्हें भरपूर स्नेह के साथ अपने परिवार को खिलाना-पिलाना है। स्नेह द्वारा ही सबको पूर्ण तृप्ति अनुभव करानी है। किसी को कुछ देते समय मनहूस व्यवहार नहीं करना है।'' जब हम स्नेह के साथ देते हैं तो लेने वाले को भी प्रसन्नता होती है। वह दिल से धन्यवाद करते हुए लेता है और शुभकामनाएँ देता है। खाने में दी गई वस्तु कम खर्च की होने पर भी प्रेम से खिलाई जाए तो स्वादिष्ट लगती है। यह भी माना हुआ तथ्य है कि भोजन परोसते समय अतिथि के प्रति देव समान दृष्टि रखें तो वह कभी भी जूठा नहीं छोड़ेगा। आज लोग जूठा छोड़ने में अपनी सभ्यता मानते हैं लेकिन यह भी अन्न का अपमान है। खिलाने वाले का कभी हाथ पीछे नहीं जाना चाहिए। द्रौपदी की देगची को याद करके पूरे विश्वास के साथ खिलाओ तो देगची में कभी कमी नहीं पड़ेगी। आधा पेट खिलाना बड़ा पाप है। सच्ची अन्नपूर्णा बन, प्रेम से भरपेट खिलाओ। खिलाकर उसके

मुख से जबरदस्ती अपनी प्रशंसा के शब्द मत निकलवाओ। कभी मत पूछो कि मैंने जो खाना खिलाया है वह कैसा बना है या मैंने जो आपको भेंट दी है वह कैसी लगी है। यह तो चापलूसी करवाने के बराबर हो जाता है।

प्रभु-स्नेही – सच्ची गृहिणी अपना कर्त्तव्य समझकर घर के हर कोने को स्वच्छ रखेगी और उसे कम खर्च वाली वस्तुओं से श्रृंगारेगी। व्यर्थ वस्तुओं को बुद्धि के प्रयोग से समर्थ बनाएगी। वह समय का भी सदुपयोग करेगी। दिन का तीसरा हिस्सा, नहीं तो कम-से-कम चौथा हिस्सा अवश्य प्रभु की याद व सेवा में गुज़ारेगी। प्रभु-स्नेही होगी। प्रात: जल्दी उठेगी। सुघड़ गृहिणी को अपने स्वास्थ्य का भी ध्यान स्वयं ही रखना है। किसी से किसी प्रकार की सेवा लेने की नौबत न आये। कुढ़ कर व चिढ़ करके या पैर पटक-पटक कर घर के कार्य न करे, इससे काम बिगड़ने का भय तो होता ही है, साथ में परिवारजनों को भी चिंता हो जाती है। त्याग-तपस्या, सेवा, प्रेम नारी के मौलिक गुण हैं। इन गुणों का प्रयोग करने में खुशी होती है और भाग्य बढ़ता है। नम्रता में व सादगी में ही सुंदरता प्रकट होती है। सच्ची गृहलक्ष्मी वह है जो आध्यात्मिक विचारों की हो। जिसकी बैठक की मेज पर एक सुंदर विचारों वाली प्रभु-प्रेम से भरपूर पुस्तक पड़ी हो। आगंतुक उस पुस्तक से ही घर की नारी को गृहलक्ष्मी के रूप में स्वीकार कर ले और उसको नमन करे। गृहलक्ष्मी भी खिले चेहरे से उसका स्वागत करे। अगर कोई शत्रुता के भाव से आया हो तो भी वह साहसी नारी धैर्य न छोड़े। मित्रता के व्यवहार से काम न चले तो वीरांगना बनकर पेश आए और शत्रुता को मित्रता में बदलने के लिए विवश कर दे। इस प्रकार के चरित्र को बनाए रखने वाली नारी ही सुघड़ गृहिणी और सच्ची गृहलक्ष्मी कहलाती है। वही अपने जीवन के लक्ष्य में संपूर्ण उतरती है। ▲▲

रावण की पहचान

कहें युक्ति, होवे झूठ, साधनों को ज़रूरत कहें,
करें पालना क्रोध की, मानकर ज़रूरी है यह, चलें,
खेल करें मनभावन तो समझना यह भी है रावण।
कर लो सूक्ष्म रावण की पहचान।।

कर न सकें अन्दर में अपना लोभ संवरण,
रहें अज्ञान में, बाहर ज्ञान का आवरण;
मिला न जब मनमाना, बुन दिया खूब ताना-बाना,
सत्यता से दूर, घड़ दिए कई कारण-अकारण,
लगे फिर सेवा में ग़र तो होगा कैसे जग संवरण
सधेगा न मन, न होगी दिव्यता धारण।
इसे भी कहते हैं सूक्ष्म रावण।
कर लो सूक्ष्म रावण की पहचान।।

ऊपर वृद्धि, अन्दर खींचातान, मान-शान,
तोड़ के जंज़ीरें लोहे की, गर फँसे रेशम की डोरियों में,
हुए जग से उपराम इस मग में,
लुभाया जगमग माया की लोरियों ने,
आ टपके जब दिल चाहे, पड़ी आवश्यकता तो हुए नदारद,
व्यर्थ बोल, समय व्यर्थ, न धीरज, न कारज;
यही हैं भाई-भतीजे-बन्धु विकारों के, ओ भोले अंजान!
सोच-समझ के विजय पाले, न बन नादान।
कर लो सूक्ष्म रावण की पहचान।।

– ब्र.कु. राजकुमारी, मजलिस पार्क (देहली)

दास्तान एक ग्रामीण बाला के सशक्तिकरण की

–ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

उस सुबह, घास-फूस से बने छप्पर की ठण्डक से ठिठुरन महसूस कर मैं छत पर जाकर धूप में बैठ गई। ज्ञान-योग की कक्षा में आए हुए सभी भाई-बहनें उसी छत से होकर अपने-अपने घर चले गए थे क्योंकि सभी छतें एक-दूसरे से जुड़ी हुई थीं। सूर्य की किरणों की गर्मी और प्रकाश चारों ओर फैल जाने के बाद भी गाँव के जीवन में चुप्पी छाई थी। कोई-कोई व्यक्ति ही कम्बल ओढ़े, आग जलाए, पशुओं की देखभाल में रत अथवा नल से पानी भरता दीख रहा था, शेष तो सभी अपने-अपने दड़बे में घुसे हुए थे।

अचानक मैंने कदमों की आहट सुनी और नजरें उठाई तो देखा कि घर की मालकिन की 10 वर्ष की कन्या मैले-कुचैले कपड़े पहने, उलझे हुए बाल लिए ऊपर आ रही थी। उसके चेहरे पर रोने के बाद आँसुओं से पपड़ी-सी जम गई थी। मुझे समझते देर न लगी कि इस बच्ची की कोई ज़िद्द पूरी नहीं हुई होगी और यह रूठ कर छत पर छिपने आ रही है। मुझे देख वह पहले तो सहमी पर मैंने जब प्यार से बुलाया तो आ गई। मैंने उसका हाथ अपने हाथों में लिया और उनमें पहनी हुई चूड़ियों की तरफ इशारा करके पूछा कि इन छोटे-छोटे हाथों में यह भारी-भारी बोझ क्यों डाला है? उसने अपना हाथ छुड़ाने की असफल कोशिश की और आँखों की कोरों में उभरे आँसुओं को अपनी मैली बाजू से पोंछ लिया। मैं समझ गई, हो-न-हो ये चूड़ियाँ ही इसके दर्द का कारण हैं। मैंने उसे और प्यार देकर विश्वास में लिया और सारी बात बताने को कहा। उसने कहा – आज गाँव में मणियार (चूड़ियाँ पहनाने वाला) आएगा और मैंने मम्मी से नई चूड़ियाँ पहनने की इच्छा व्यक्त की तो मुझे डाँट दिया। मैं गृहिणी की आर्थिक दशा को जानती थी, उसके पास दो समय का भोजन जुटाना ही पहाड़ जितना प्रश्न है, बच्चे छोटे हैं, जमीन है ही नहीं, पति बूढ़ा और बीमार है, ऐसे में बच्ची की यह विलासिता उसे कैसे सहन हो सकती थी?

भविष्य की दो तस्वीरें

मुझे एक तरफ माँ की बेबसी पर रहम आया और दूसरी तरफ बच्ची के भविष्य की दो तस्वीरें अनायास ही अन्तर्चक्षु के सामने उभर आईं। एक तस्वीर में मैंने देखा कि वह 5 वर्ष बाद एक गन्दे, पिछड़े गाँव में ब्याह दी गई है। वह पढ़ा-लिखा सब भूल गई है। घूँघट और हाथ-पाँव में पहनी गहने नुमा जंजीरों में जकड़ी वह सभी के ताने सहती, रूखा-सूखा खाती अपनी माँ की तरह ही बेबसी का जीवन गुज़ार रही है और दूसरी तस्वीर देखी कि वह पढ़-लिख गई है, ज्ञान-योग सीख कर पाँव पर खड़ी हो गई है। त्याग और तप को अपना कर जन-जन की आध्यात्मिक सेवा में लग गई है। वह जन-जन द्वारा सम्मानित और पूजित है और उसके चेहरे पर अदम्य तेज और अविनाशी संतोष की रेखाएँ हैं। मैं उसके दूसरे रूप से रोमांचित हो गई। मैंने उसको अपने साथ बैठा लिया और भविष्य के उसके दोनों रूपों का वर्णन उसके सामने करके बताया कि यदि तुमको दूसरा रूप चाहिए तो मन लगा कर पढ़ना होगा। हाथ-पाँव की फैशन के नाम पर बँधी बेड़ियों को छोड़ना होगा। छोटी-छोटी बातों में मन की शक्तियों को नष्ट न करके परमात्मा की याद में मन लगा कर अपने देवी रूप के लक्ष्य पर बुद्धि का निशाना लगाए रखना होगा। उसकी आँखों में चमक आने लगी। उसने कहा कि मैं पढ़ना नहीं चाहती, अभी से आपके साथ चलना चाहती हूँ। मैंने उसके इस बचपने को नजरअन्दाज़ करते हुए उसकी पीठ थपथपाई, उसकी आँखें पोंछी, पुनः पढ़ाई का महत्त्व बताया और हृदय

का सारा स्नेह उस पर उड़ेल कर उसे शुभ कामनाएँ दीं। मैंने अपना कर्त्तव्य पूरा किया था। ज्ञान सुनाना, रास्ता दिखाना, शुभकामना रखना हमारा फर्ज़ है, इससे आगे क्या होता है उसमें उस व्यक्ति का भाग्य, पुरुषार्थ, शिव बाबा की मदद और अन्य कई बातें होती हैं।

जहाँ हिम्मत है वहाँ मदद है

लगभग पाँच वर्ष बाद मुझे एक पत्र मिला। पहली नज़र में मुझे लिखने वाला व्यक्ति अनजान लगा पर ज्यों ही पढ़ना शुरू किया तो उसमें छत पर बैठ कर मात्र आधे घण्टे में जो बातें उस 10 वर्षीया बच्ची से हुईं थीं उनका उल्लेख था। मैंने नाम देखा तो पाँच वर्ष पुरानी स्मृति ताज़ा हो उठी। पत्र में लिखा था कि मैंने 10वीं कक्षा अच्छे अंकों से पास की है, आपने जो दो तस्वीरें बताई थीं, उनमें से बाद वाली तस्वीर में मैं ढलना चाहती हूँ तो अब मुझे क्या करना है? मुझे लगा कि जिस चित्र की धुँधली लकीरें आज से पाँच वर्ष पहले खींची थीं, उसमें रंग भरने का समय अब आ गया है। मैंने उसे आश्रम के भाई-बहनों से सम्पर्क कर मधुबन जाने का लिख दिया। घर की आर्थिक स्थिति तो ऐसी थी कि मधुबन जाना सपना ही था परन्तु जहाँ चाह है वहाँ राह है। जहाँ हिम्मत है वहाँ मदद है। जहाँ उमंग है वहाँ सफलता है। जहाँ ईश्वरीय प्रेम, मानवता से प्रेम और त्याग तथा अटूट लगन है वहाँ सफलता जन्मसिद्ध अधिकार है। उसने एक प्राइवेट स्कूल में 150 रुपये महीने पर छोटे बच्चों को पढ़ाने का कार्य लगभग 6 मास तक किया और उस पैसे से वह मधुबन आ गई। माता-पिता की स्वीकृति मिलने पर वह एक राजयोग सेवाकेन्द्र पर चली गई और राजयोग के अभ्यास से वह ग्रामीण बाला ईश्वरीय कार्य की सशक्त भुजा बन गई। ईश्वरीय सेवाओं में गुणयुक्त मधुर व्यवहार से उसने सभी का दिल जीत लिया। आज वह 100 से भी अधिक आत्माओं को नियमित ज्ञान द्वारा और अनगिनत को अपनी शुभभावनाओं द्वारा सींच रही है। आज हम महिला सशक्तिकरण के विभिन्न पहलुओं पर विचार कर रहे हैं। किसी भी महिला को परिवार द्वारा सताए जाने पर, विधवा होने पर, तलाक होने पर या अन्य-अन्य कोई अत्याचार होने पर, धन के द्वारा उसके घावों को पोंछने का प्रयास किया जाता है। क्या ही अच्छा हो कि जब वे अभी छोटी आयु की हैं तभी उनमें शिवशक्ति के संस्कारों का बीजारोपण कर दिया जाए ताकि बड़ी होकर वे आधारित नहीं वरन् अनेकों को आधार देने वाली बनें। आज हर क्षेत्र में बेरोजगारी है। ऐसे में हर व्यक्ति कार्य के नए-नए क्षेत्र तलाश रहा है। चरित्र-निर्माण, मूल्य आधारित जीवन तथा श्रेष्ठ संस्कार निर्माण का क्षेत्र अभी भी ऐसा है जहाँ स्थान रिक्त हैं। अतः जो महिलाएँ सत्यता के मार्ग पर चल कर जीवन को महान बनाना चाहती हैं, पैरों पर खड़ा होना चाहती हैं उनके लिए प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय का द्वार खुला है। यहाँ चरित्रवान बनने और बनाने की सेवा से सम्बन्धित कई पद खाली हैं। चरित्र के पीछे धन है, धन के पीछे चरित्र नहीं। जब नारी आत्मबल के मार्ग पर बढ़ चलेगी तो संतोष रूपी धन से सम्पन्न हो जाएगी और स्थूल धन की भी कभी नहीं रहेगी। ❑

जमशेदपुर (आदित्यपुर)- सांसद भ्राता चप्पाई सोरेन जी को राखी बांधती हुईं ब्र.कु. सुधा बहन ।

ज्ञान दीप जगाना ही.......पृष्ठ 01 का शेष

अत: वास्तव में इन दोनों कथाओं में एक बहुत महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक वृत्तान्त को लाक्षणिक भाषा में एक रूपक देकर वर्णन किया गया है। ज्ञान-दृष्टि के अनुसार नरकासुर माया अर्थात् मनोविकारों ही का पर्यायवाची है। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार को गीता में 'नरक का द्वार' भी कहा गया है और 'आसुरी लक्षण' भी माना गया है। चूंकि इन विकारों अथवा आसुरी लक्षणों पर विजय प्राप्त करना बहुत कठिन है, इसलिए इन्हीं का नाम इस रूपक में बलि है। गीता में माया ही को दुस्तर अर्थात् 'बलि' कहा गया है। विश्व के इतिहास में कलियुग के अन्त का समय ऐसा समय है जब इन्हीं विकारों का सब नर-नारियों के मन पर राज्य होता है। तब सारी सृष्टि नर्क बनी होती है। इसलिए कहा जा सकता है कि तक राजा बलि अथवा नरकासुर का ही सृष्टि पर आधिपत्य था। सतयुग में भारत स्वर्ग भूमि था और यहाँ के वासी देवी-देवता थे परन्तु जन्म-मरण के चक्र में आते हुए वे कलियुग के अन्त में सृष्टि को नर्क बनाने वाले और नर-नारी को असुर बनाने वाले इन बलि (विकारों) के आधीन हो गये थे। तब कलियुग के अन्त में ईश्वरीय ज्ञान देकर परमपिता परमात्मा ने इन विकारों रूपी नरकासुर का अन्त किया और सतयुग में जो मानवी आत्मायें श्री लक्ष्मी अथवा अन्य देवी-देवता नाम से अभिज्ञात थे, उन्हें इस नरकासुर के बन्धन से मुक्त कराया। इसी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण वृत्तान्त की याद में आज भी हर वर्ष कार्तिक के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को छोटी दीवाली मनाई जाती है और फिर इसके बाद श्री लक्ष्मी और श्री नारायण के स्वतन्त्रता पूर्वक राज्य के शुरू होने अथवा सतयुग के शुरू होने की खुशी में अगले ही दिन अमावस्या की रात को बड़ी दीवाली मनाई जाती है।

देवत्व की आसुरीयता पर विजय

कई लोग ऐसा मानते हैं कि दीवाली का त्योहार रावण पर राम की विजय के बाद मर्यादा-युक्त रामराज्य प्रारम्भ होने का स्मरोणोत्सव है। वास्तव में इसका भी वही भाव है जो कि पूर्वोक्त दो आख्यानों का है क्योंकि रावण आसुरी शक्ति और राम ईश्वरीय शक्ति का प्रतीक है।

ज्ञान-दीप जगाए बिना दीवाली निरर्थक

छोटी दीपावली, बड़ी दीपावली और इन दोनों से पहले की अन्धेरी रात्रि (धन-तेरस) पर जो दीप-दान करता है वह अकाल मृत्यु से बच जाता है। दीप-दान करने का भाव भी ज्ञान-दान करना है। दीपावली के इस ज्ञान पक्ष की उपेक्षा का ही यह परिणाम है कि हर वर्ष मिट्टी के दीप अथवा आधुनिक परिपाटी के अनुसार मोमबत्तियों और बिजली से रोशनी कर लक्ष्मी जी का आह्वान करने के बाद भी आज भारत देश में लक्ष्मी जी का स्थाई वास नहीं। यहाँ भ्रष्टाचार ही राजा बलि अथवा नरकासुर बनकर सब पर अपना आधिपत्य जमाये हुए हैं। इसके परिणामस्वरूप भारत के आधे से अधिक लोग निर्धनता के स्तर से नीचे का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। लक्ष्मी जी को तो 'पद्मा', 'कमला' इत्यादि नामों से भी याद किया जाता है, क्योंकि वे कमल-पुष्प-निवासिनी मानी गई हैं। परन्तु आज हमारे गृहस्थों के घर कमल समान पवित्र ही नहीं बने और उनके अन्तर की ज्योति ही नहीं जगी तब भला विषय विकारों से नर्क बने घर में लक्ष्मी जी का शुभ आगमन कैसे हो सकता है?

दीपावली 'महारात्रि' कैसे है?

यों आज भी साधक लोग दीपोत्सव की रात्रि को साधना के दृष्टिकोण से 'महारात्रि' मानते हैं। उनकी यह धारणा है कि इस रात्रि को मन्त्र की सिद्धि की जा सकती है।

अत: वे इस रात को जागकर अपनी मन्त्र साधना करते हैं। यह मान्यता भी कलियुग के अन्त की घोर अज्ञानरात्रि से सम्बन्धित है। कलियुग के इस तमोप्रधान अन्तिम चरण में जो कोई भी परमात्मा द्वारा दी हुई मार्ग प्रदर्शना (मन्त्रणा) के अनुसार चलता है उसको सर्व सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। भक्त लोग यह भी मानते हैं कि जो इस रात्रि को आलस्य के वश सोया रहता है, वह श्री लक्ष्मी के आशीर्वाद से वंचित रहता है। परन्तु वास्तव में यह बात भी आध्यात्मिक जागृति के बारे में कही गई है। कलियुग के अन्तिम चरण में जो व्यक्ति अज्ञान-निद्रा में सोये रहते हैं, वे आने वाले सतयुगी श्री लक्ष्मी और श्री नारायण के सुख पूर्ण स्वराज्य में सौभाग्य का स्थान प्राप्त नहीं कर सकते। इतना ही नहीं, ईश्वरीय ज्ञान लेने के अतिरिक्त संगम युग में ईश्वरीय ज्ञान-दान देने का भी बहुत महत्त्व माना गया है। इसलिए भी दीपावली की महारात्रि को दीपदान करने का भी बड़ा महत्त्व है। इस दिन कुछ लोग तो दीपकों को अपने मस्तक पर घुमाकर दान कर देते हैं। वे समझते हैं कि इससे सर्व अनिष्ट से निवृत्ति होती है। स्पष्ट है कि सर्व अनिष्ट निवृत्ति तो ज्ञान द्वारा आत्मा का दीप जगाने से ही हो सकती हैं। संगम युग में मनुष्यात्माओं का जीवन-दीप अलौकिक होने के फलस्वरूप ही नर श्री नारायण और नारी श्री लक्ष्मी पद को अथवा देवता या देवी पद को प्राप्त करते हैं। तभी सतयुग का आरम्भ होता है। इसी के उपलक्ष्य में दीवाली के अवसर पर लोग अपने घरों पर पताका फहराते हैं और यह भी कहा जाता है कि इसी दिन राजा पृथु ने पृथ्वी पर अपना चक्रवर्ती राज्य प्रारम्भ किया था और यह पृथ्वी हरी-भरी तथा सुख समृद्धि पूर्ण हुई थी जबकि इससे पहले यहाँ पर दरिद्रता थी।

बड़ी दीपावली सतयुगी श्री नारायण-राज्य की यादगार

दीवाली के अवसर पर लोग प्राय: नये कपड़े पहनते हैं, कुछ नये बरतन खरीदते हैं और पुराने बही खाते अथवा आय-व्यय पंचिकाओं को बन्द कर के नये बही खाते शुरू करते हैं। ये सब नई सृष्टि में सुख-शान्ति-पूर्ण नये युग के आरम्भ के सूचक हैं।

अब फिर से कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि के संगम का समय चल रहा है जबकि हमें अपने पुराने हिसाब-किताब को समेटने का पुरुषार्थ करना चाहिए और ईश्वरीय ज्ञान तथा योग के द्वारा घर-घर में ज्ञान-दीप जगाने की सेवा करनी चाहिए क्योंकि सर्व अनिष्ट से निवृत्ति का मात्र यही एक साधन है। इससे ही भारत में दरिद्रता समाप्त होगी और यहाँ सुख-शान्ति के सतयुग के दिन आयेंगे। दीपावली को सही रीति से मनाने का तरीका यही है। ❑

राजकोट- जन्माष्टमी पर आयोजित चैतन्य झाँकी का उद्घाटन करते हुए सौराष्ट्र विश्वविद्यालय के कुलपति कमलेश भाई जोशीपुरा, भावना बहन जोशीपुरा, ब्र.कु. भारती बहन तथा अन्य।

गिद्ध अभी मरे नहीं हैं

–ब्रह्माकुमार दिनेश, हाथरस

पिछले कुछ समय से यह बात चर्चा में है कि पर्यावरण के सफाईकर्मी अर्थात् गिद्ध ढूँढ़ने पर भी नहीं दिखाई देते हैं। ऐसा लगता है कि वे लुप्त हो गये हैं। अन्य कई प्रजातियों की तरह इनके साथ भी ऐसा होना संभव है परन्तु अब तो बिना पंखों के गिद्धों से यह धरती अटी पड़ी है। ये बिना पंखों के उड़ते भी हैं और सागर के अन्दर चलते भी हैं। हवा की रफ्तार से ज्यादा दौड़ते हैं। इनमें कई प्रकार की बोलियाँ बोलने वाले भी हैं और निरक्षर भी हैं। नहीं समझे ? हम धरती की सर्वोत्तम कृति माने जाने वाले मानव की ही बात कर रहे हैं।

जानवर भूसा खा रहा है और ये गिद्ध भूसा-सा खाने वालों को चबा रहे हैं। जिसका दूध, माँ बना कर पीते हैं उसे ही हलाल करने के लिए गिद्धों के हवाले कर रहे हैं। बहाना यह बना रहे हैं कि अगर इनका सफाया नहीं किया गया तो फिजूल का कूड़ा-करकट बढ़ जायेगा, प्रदूषण बढ़ जायेगा। मानवाधिकार रिपोर्ट के अनुसार पिछले एक दशक में एक करोड़ 37 लाख बालिका भ्रूण नष्ट किये गये। ये तो रहे सरकारी आँकड़े, अब वास्तविक संख्या तो इससे कई गुना अधिक होगी। आँखिन देखी रिपोर्ट में डिब्बा बंद नवजातों का स्वाद लेकर, खाते दिखाया जा रहा है।

इनकी एक और भी प्रजाति है जो देखने में ईश्वर-अल्लाह भक्त हैं, वेदों, शास्त्रों, उपनिषदों, पुराणों, कुरान आदि के ऊंचे और प्रकाण्ड ज्ञाता भी हैं। इनकी दृष्टि अपने गिद्ध भाइयों की तरह ही सड़े-गले शरीरों पर ही रहती है। जैसे वे गिद्ध बहुत ऊँचाई पर होते हुए भी नीचे के सड़े-गले शरीरों पर निगाह रखते हैं और दिखाई देने पर तुरन्त छीना-झपटी शुरू कर देते हैं, ऐसे ही इनका दिखावा तो बहुत ऊँची विद्वता का होता है परन्तु निगाह मरे हुए शरीर की बनावट, कसावट, सजावट पर ही टिकी रहती है। (गीता में भगवान ने शरीरों को मरा हुआ और आत्मा को अमर कहा है इसलिए यहाँ शरीरों को मृत और आत्मा को चैतन्य कहा गया है)। ये मौकापरस्त गिद्ध किसी भी अवसर पर हाथ साफ करने से नहीं चूकते हैं। कइयों के चर्चे भी चलते हैं परन्तु गिद्ध-गिद्ध मौसेरे भाई! कभी नैना को भूनते हुए, कभी इमराना को नौंचते हुए ये गिद्ध अपनी ही जाति को खत्म कर रहे हैं। इनकी न बहन होती है, न बेटी। सभी सम्बन्ध इनके बस! भूख पर आकर खत्म हो जाते हैं। गली-गली, मुहल्ले-मुहल्ले सर्वत्र व्यापक हैं। नोच खा नहीं पाते तो नोच-खा जाने वाली नज़रों से घूरते हैं।

अब तो इन्हें बताना पड़े कि राम की सेवा में लगे हुए हम, आत्मा रूपी सीताओं की खोज कर रहे हैं, तुम भी राम के मददगार बनो। सभी मनुष्यात्माओं और स्वयं के उत्थान के विषय में सोचो, अब अधिक पतन ठीक नहीं। परमात्मा तुम्हारा भला करेंगे। ❑

धमतरी- ज़िला थाना में टी.आई. सुभाष भाई चौधरी तथा सभी पुलिस के जवानों को राखी बाँध कर समूह चित्र में ब्र.कु. नवनीता बहन तथा ब्र.कु. प्राजक्ता बहन ।

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रेस, शान्तिवन – 307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया । सह-सम्पादिका ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : bkatamad1@sancharnet.in Ph. No. (02974)- 228125 theworldrenewal@yahoo.co.in

1. गोवा- गोवा के मुख्यमंत्री भ्राता प्रताप सिंह को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु. शोभा बहन । **2. अहमदाबाद (अमराईवाड़ी)-** गुजरात के मुख्यमंत्री भ्राता नरेन्द्र मोदी को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु. लक्ष्मी'बहन । **3. बिलासपुर-** छत्तीसगढ़ के मुख्य न्यायाधीश भ्राता एस.के. पटनायक को आत्म-स्मृति का तिलक लगाती हुईं ब्र.कु. गीता बहन । **4. भुवनेश्वर-** उड़ीसा के मुख्यमंत्री भ्राता नवीन पटनायक को राखी बाँधने के पश्चात् ब्र.कु. लीना बहन, मंजू बहन, कल्पना बहन तथा अन्य उनके साथ'। **5. रायपुर-** छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री डॉ. भ्राता रमन सिंह को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु. सविता बहन । **6. राँची-** झारखण्ड के मुख्यमंत्री भ्राता अर्जुन मुण्डा को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु. निर्मला बहन । **7. नालागढ़-** हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री भ्राता राजा वीरभद्र सिंह को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु.।राधा बहन । **8. गोहाटी-** आसाम के मुख्यमंत्री भ्राता तरुण गगोई को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु. अल्पना बहन । **9. शिलांग-** मेघालय के मुख्यमंत्री भ्राता डी.डी.लोपांग को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु. नीलम बहन । **10. आबू रोड-** सिरोही जिला शिक्षा विभाग की तरफ से आयोजित प्रधानाध्यापकों की वाक् पीठ में सम्बोधित करती हुईं ब्र.कु. उर्मिला बहन । मंच पर ज़िला शिक्षाधिकारी भंवरलाल रैगर, ब्लाक शिक्षाधिकारी भ्राता जगदीश रावल तथा अन्य । **11. चित्तौड़गढ़-** राजस्थान के उद्योग मंत्री भ्राता नरपत सिंह राज को राखी बाँधती हुईं ब्र.कु. आशा बहन । **12. मुम्बई (विलेपार्ले)-** अभिनेता भ्राता दारा सिंह को आत्म-स्मृति का तिलक लगाती हुईं ब्र.कु. प्रीति बहन ।

Regd. No. 10563/65
Postal Regd. No.
RJ/WR/25/12/2003-2005,
Posted at Shantivan, 307510
(Abu Road) on 5-7th of the
month

1. आबू रोड (शान्तिवन)- व्यापार तथा उद्योग प्रभाग द्वारा आयोजित महासम्मेलन का उद्घाटन करते हुए सांसद बहन निवेदिता माने, राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी, राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी जी, ब्र.कु. योगिनी बहन, ब्र.कु. मदनलाल शर्मा, ब्र.कु. अशोक गाबा भाई तथा अन्य ।

2. जयपुर- राजस्थान की मुख्यमंत्री बहन वसुंधराराजे सिंधिया को आत्म-स्मृति का तिलक देती हुई ब्र.कु. चन्द्रकला बहन ।

3. आबू पर्वत (ज्ञान सरोवर)- वैज्ञानिक तथा अभियंता प्रभाग द्वारा आयोजित आपदा प्रबन्धन कार्यक्रम का उद्घाटन करती हुई नई दिल्ली के आपदा प्रबन्धन अध्ययन केन्द्र की निदेशिका बहन अमरजीत कौर, राजयोगिनी दादी मनोहरइन्द्रा जी, ब्र.कु. मोहन सिंघल भाई, पंजाब सरकार के सचिव भ्राता हरमीत सिंह तथा अन्य ।

4. बैंगलोर (कल्याण नगर)- श्रीश्रीश्री कुमार चन्द्रशेखर स्वामी जी को राखी बाँधती हुई ब्र.कु. नागरत्ना बहन । 5. कोची- उच्चतम न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश भ्राता वी.आर. कृष्णा अय्यर को राखी बाँधती हुई ब्र.कु. राधा बहन ।